UPHIN/2003/15128

डांक पंजीयन सं. - S.S.P./L.W./N.P.-4000637674/2020 - 2022

वर्ष: 18
अंक: 44
पृष्ठ: 08
मूल्य: 5 रूपये

रत्नशिखा टाइम्स

कृषि और किसानों की आवाज उठाने वाला देश का सबसे लोकप्रिय समाचार पत्र

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

3 मरीज एडमिट नहीं होने पर जिम्मेदारो....

लखनऊ, मंगलवार, 27 अप्रैल - 03 मई 2021 तक

अस्पताल में भर्ती के लिए एंटीजेन टेस्ट 8

महामारी से देश की स्थिति और भी चिंताजनक, एक दिन में कोरोना से 2761 मौतें, करीब 3.50 लाख केस आये सामने

ऑक्सीजन की कमी से राज्यों में बिगड़ते हालात

भारत में कोरोन वायरस की दूसरी लहर का कहर थमने का नाम नहीं ले रही है। हर दिन कोरोना के मामलों में बड़ा इजाफा देखने को मिल रहा है, जिसकी वजह से देश में अस्पतालों में बेड से लेकर ऑक्सीजन की किल्लतें होने लगी हैं। देश में कोरोना की दूसरी लहर हर दिन अपने ही बनाए रिकॉर्ड ध्वस्त कर रही है।

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में कोरोन वायरस की दूसरी लहर का कहर थमने का नाम नहीं ले रही है। हर दिन कोरोना के मामलों में बड़ा इजाफा देखने को मिल रहा है, जिसकी वजह से देश में अस्पतालों में बेड से लेकर ऑक्सीजन की किल्लतें होने लगी हैं। देश में कोरोना की दूसरी लहर हर दिन अपने ही बनाए रिकॉर्ड ध्वस्त कर रही है। वर्ल्डोमीटर के मुताबिक, शनिवार रात 12 बजे तक कोरोना के 349,313 नए मामले सामने आने के साथ संक्रमण के कुल मामले बढ़कर 1,69,51,621 पर पहुंच गए, जबकि उपचाराधीन मरीजों की संख्या 26 लाख से अधिक हो गई है। देश में लगातार तीन-चार दिनों से कोरोना के एक दिन में तीन लाख से अधिक मामले आ रहे हैं।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, शनिवार को महज 24 घंट में 2761 लोगों की मौत हुई है, जो काफी डराने वाले आंकड़े हैं। एक दिन में 2,760 संक्रमितों की मौत होने से मृतकों की संख्या बढ़कर 1,92,309 हो गई है। देश में उपचाराधीन मरीजों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। फिलहाल यह आंकड़ा 26,74,35 है, जो संक्रमण के कुल मामलों का 15.8 फीसदी है। देश में कोरोना वायरस केसों की संख्या का एक दिन का सर्वाधिक आंकड़ा है।

ठीक होने की दर 83 फीसदी

संक्रमण से उबरने वाले लोगों की दर और गिर गई है। यह 83 फीसदी है। अब तक 1,40,77,870 लोग संक्रमणमुक्त हो चुके हैं। संक्रमण के कारण मरने वालों की दर गिरकर 1.1 फीसदी हो गई है। देश में एक दिन में 2,760 संक्रमितों की मौत हुई है, जिनमें से 676 महाराष्ट्र से थे। आईसीएमआर के मुताबिक, 23 अप्रैल तक 27,61,99,222 नमूनों की कोविड-19 संबंधी जांच की गई, जिनमें से 17,53,569 नमूनों की जांच शुक्रवार को की गई।

करीब 74 फीसदी मामले दस राज्यों से

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने शनिवार को बताया कि कोविड-19 के दैनिक नए मामलों में से करीब 74 फीसदी मामले महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और दिल्ली समेत कुल दस राज्यों से हैं। मंत्रालय ने बताया कि महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, कर्नाटक, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, केरल, गुजरात, तमिलनाडु, राजस्थान, बिहार और पश्चिम बंगाल समेत 12 राज्यों में संक्रमण के दैनिक मामलों में वृद्धि देखी जा रही है।

दुनिया में 14 करोड़ से अधिक केस

विश्व में कोरोना महामारी से अब तक 30.86 लाख से ज्यादा लोग काल का ग्रास बन चुके हैं, वहीं संक्रमितों की संख्या बढ़कर 14.56 करोड़ से अधिक हो गई है। अमेरिका की जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के विज्ञान एवं इंजीनियरिंग केंद्र (सीएसएसई) की ओर से जारी ताजा आंकड़ों के अनुसार दुनिया के 192 देशों एवं क्षेत्रों में संक्रमितों की संख्या बढ़कर 14 करोड़ 56 लाख 63 हजार 23 हो गई है, जबकि 30 लाख 86 हजार 717 लोग अपनी जान गंवा चुके हैं।

वैश्विक महाशक्ति माने जाने वाले अमेरिका में कोरोना वायरस का कहर थमने को नाम नहीं ले रहा है तथा यहां संक्रमितों की संख्या 3.2 करोड़ के करीब पहुंच गई है जबकि 5.71 लाख मरीजों की इस महामारी से मौत हो चुकी है।

यूपी-बिहार सहित देश के कई राज्यों में सबको मुफ्त उपलब्ध होगी कोरोना वैक्सीन

केंद्र सरकार की ओर से 18 वर्ष से अधिक उम्र के सभी लोगों के लिए टीकाकरण की घोषणा के बाद कई राज्यों मे अपने यहां सबको मुफ्त में कोरोना की वैक्सीन देने का फैसला किया है।

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्र सरकार की ओर से 18 वर्ष से अधिक उम्र के सभी लोगों के लिए टीकाकरण की घोषणा के बाद कई राज्यों मे अपने यहां सबको मुफ्त में कोरोना की वैक्सीन देने का फैसला किया है। केंद्र के फैसले के बाद पहले उत्तर प्रदेश ने सबको मुफ्त में टीका देना का फैसला लिया उसके बाद मध्य प्रदेश और बिहार और छत्तीसगढ़ ने भी ऐलान कर दिया।

अब केरल सरकार ने कहा है कि वो अपने राज्य के लोगों को मुफ्त में कोरोना वायरस का टीका देगा। केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने बुधवार शाम को कहा कि उनकी सरकार 18 साल से अधिक उम्र के सभी लोगों को मुफ्त में टीका मुहैया करवाएगा। विजयन ने कहा कि राज्य सरकारों को टीका खरीदने के लिए कहा गया है लेकिन, कोरोना के कारण राज्य पहले से ही वित्ती बोझ से गुजर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्यों को आर्थिक संकट की ओर से धकेलने के बजाय केंद्र को राज्यों को मुफ्त में टीका देना चाहिए।

यूपी में मुफ्त वैक्सीनेशन का ऐलान करते हुए सीएम ने कहा कि राज्य सरकार अपने संसाधनों से टीकाकरण कार्यक्रम को आगे बढ़ाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि टीकाकरण अभियान को व्यापक स्तर पर संचालित करने के लिए स्वास्थ्य विभाग कार्य योजना बनाकर कार्य करे। हमे वैक्सीनेशन सेन्टर बढ़ाने होंगे। लक्षित आयु वर्ग के लोगों का डेटा बेस तैयार करना होगा। साथ ही वैक्सीन की डोज की आवश्यकता का आकलन कर उत्पादकों से इसकी सुचारू आपूर्ति के प्रबंध भी करने होंगे। उन्होंने टीके के लिए कोल्ड चेन सहित सुरक्षित भंडारण और परिवहन के लिए भी व्यवस्था करने पर बल दिया।

वहीं, बिहार में टीकाकरण अभियान पहले से ही मुफ्त में चल रहा है। राज्य में विधानसभा चुनाव से पहले ही एनडीए ने अपने घोषणा पत्र में सभी को मुफ्त टीका देना का वादा किया था। जब सत्ता में आई तो कैबिनेट की पहली बैठक में ही मुफ्त में टीका

देने पर मुहर लगा दी गई थी। जिसके बाद से राज्य में सभी को मुफ्त में टीका दिया जा रहा है। चाहे वो प्राइवटे अस्पताल हो या फिर सरकारी, हर जगह फ्री में टीकाकरण किया जा रहा है। बुधवार को खुद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने ट्वीट कर सभी को मुफ्त में टीका देने की बात कही है।

असम के स्वास्थ्य मंत्री हिमंता बिस्व सरमा ने बुधवार को कहा कि राज्य सरकार एक मई से 18 से 45 वर्ष की आयु के लोगों का मुफ्त में टीकाकरण कराएगी। उन्होंने कहा कि पिछले साल कोविड-19 से निपटने के लिए मिली दान राशि का इस्तेमाल इस उद्देश्य के वास्ते किया जाएगा। राज्य का स्वास्थ्य विभाग भारत बायोटेक को पहले ही टीके की एक करोड़ खुराक के लिए पत्र लिख चुका है।

उत्तर प्रदेश सरकार के अनुरोध पर दूसरी ऑक्सीजन एक्सप्रेस लखनऊ जाएगी

रेलवे ने बुधवार को कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार के अनुरोध पर वह राज्य के लिए अपनी दूसरी ऑक्सीजन एक्सप्रेस शुरू करेगा।

लखनऊ, विशेष संवादाता। रेलवे ने बुधवार को कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार के अनुरोध पर वह राज्य के लिए अपनी दूसरी ऑक्सीजन एक्सप्रेस शुरू करेगा। रेलवे ने कहा कि ऑक्सीजन एक्सप्रेस सात से आठ खाली टैंकर लेकर बोकारो में तरल चिकित्सीय ऑक्सीजन भरवाने के लिए बुधवार रात को लखनऊ से रवाना होगी।

रेलवे ने यह भी कहा कि उन्हें मध्यप्रदेश से भी इसी प्रकार का अनुरोध प्राप्त हुआ है कि राउरकेला और बोकारो से तरल ऑक्सीजन भोपाल पहुंचाना है, इस आवागमन पर योजना बनाई जा रही है।

इस प्रकार की पहली रेलगाड़ी ऑक्सीजन महाराष्ट्र ले जाने के लिए आज मध्यरात्रि में विजाग पहुंचेगी।

इससे पहले महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश सरकार ने रेलवे को पत्र लिख कर इस बात की संभावना तलाशने को कहा था कि क्या तरल चिकित्सकीय ऑक्सीजन टैंकरों को रेल नेटवर्क के जरिए भेजा जा सकता है। रेलवे ने नीति तैयार की है जिसके अनुसार क्रायोजेनिक टैंकर को राज्यों के विभिन्न स्थानों पर पहुंचाया जाएगा।

चूर्णी फफूंद और मोजेक रोग से हो रही मूंग और उड़द की फसल बर्बाद जाने इसके रोकथाम के तरीके

जायद सीजन की खीरा मुख्य फसल है। खीरा की खेती से अधिक उपज चाहिए, तो खेती के दौरान हानिकारक कीटों व रोगों का नियंत्रण करना आवश्यक है। वैसे तो खीरा फसल को बहुत से कीट व रोग नुकसान पहुंचाते हैं, लेकिन खीरा फसल के कुछ प्रमुख कीट व रोग भी हैं, जिनका प्रभाव सीधा फसल पर पड़ता है।

आरटी डेस्क, कृषि संवादाता। हमारे देश में किसान दलहनी फसलों की खेती बहुत चाब से करता है। इसकी खेती से किसानों को अच्छा मुनाफ़ा मिलता है, क्योंकि बाजार में अधिकतर दालों की मांग होती है। आज हम आपको मूंग और उड़द की फसल में लगने वाले रोगों की जानकारी देने वाले हैं।

कई बार मूंग और उड़द की फसल कई तरह के रोगों की चपेट में आ जाती है, जिसका फसल पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे में इन रोगों से फसल को समय रहते बचा लेना चाहिए।

मूंग और उड़द के प्रमुख रोग और उनकी रोकथाम

सरकोस्पोरा पत्र बुंदकी रोग

यह मूंग और उड़द की फसल में लगने वाला प्रमुख रोग है। इससे फसल की पैदावार में काफी नुकसान होता है। इस रोग में पत्तियों पर भूरे गहरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं।

रोकथाम

इस रोग से फसल को बचाने के लिए बुवाई से पहले कैप्टन या थिरम कवकनाशी से बीज को उपचारित कर लेना चाहिए।

पीला चितेरी रोग

इस रोग को विषाणु जनित माना जाता है। इस रोग में पत्तियों पर पीले धब्बे पड़ जाते हैं, जो तेजी से फैलने लगते हैं।

इसमें पत्तियां पूरी तरह से पीली दिखाई देती हैं।

रोकथाम

मूंग और उड़द की फसल में यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। इसकी रोकथाम के लिए खेत में आवश्यकतानुसार आक्सीडेमेटान मेथाइल प्रतिशत या डायमेथोएट को पानी में घोलकर छिड़क देना चाहिए।

झुर्रीदार पत्ती रोग

यह एक मुख्य विषाणु रोग है, जो अधिकतर उड़द की फसल में लगता है। इस रोग में पत्तियां अधिक मोटी और खुरदरी दिखाई देती हैं।

रोकथाम

फसल को बचाने के लिए रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर जला देना चाहिए। बता दें कि फसल में कीटनाशी दवा का छिड़काव करने से इस रोग का खतरा कम हो जाता है।

चूर्णी फफूंद

यह रोग गर्म या शुष्क वातावरण में ज्यादा फैलता है। इसमें निचली पत्तियों पर गहरे धब्बे पड़ जाते हैं। इसके बाद छोटे-छोटे सफेद बिंदु दिखाई देने लगते हैं, जो कि एक बड़ा सफेद धब्बा बन जाते हैं।

रोकथाम

फसल को बचाने के लिए घुलनशील गंधक को छिड़कना चाहिए। इसके अलावा आवश्यकतानुसार कार्बेन्डाजिम या केराथेन कवकनाशी को पानी में घोलकर छिड़क देना चाहिए।

मोजेक रोग

इस रोग में पत्तियां सिकुड़ने लगती हैं। इसके साथ ही पत्तियों पर फफोले पड़ जाते हैं। इस रोग में पौधों का विकास नहीं हो पाता है।

रोकथाम

फसल को बचाने के लिए केवल प्रमाणित बीज की बुवाई करें। इसके साथ ही रोगी पौधों को उखाड़कर नष्ट कर दें। फसल में कीटनाशी दवा का छिड़काव कर सकते हैं।

पर्ण संकुचन

यह रोग मूंग और उड़द की उपज को कम कर देता है। इसको पीली चितेरी रोग के बाद दूसरा महत्वपूर्ण विषाणु रोग माना जाता है। इस रोग में पत्तियों का विकास अच्छी तरह नहीं हो पाता है। इस रोग के लगने से पत्तियों को पोषक तत्व नहीं मिल पाते हैं।

रोकथाम

इस रोग से फसल को बचाने के लिए बीजों को इमिडाक्रोपिरिड से 5 ग्राम उपचारित कर लेना चाहिए। इसके अलावा बुबाई के 15 दिन बाद कीटनाशी दवा का छिड़काव कर देना चाहिए।

इस तरह रोग का प्रकोप कम हो जाता है।

देश में मूंग और उड़द को प्रोटीन का सबसे अच्छा स्त्रोत माना जाता है। इसके साथ ही खनिज लवण समेत कई विटामिन भी पाए जाते हैं। इन दालों का सेवन कई बीमारियों से बचाकर रखता है।

ऐसे में किसानों को इनकी खेती अच्छी देखभाल के साथ करना चाहिए। अगर इन रोगों की समय रहते रोकथाम न की जाए, तो किसानों को बाजार में इनका सही मूल्य नहीं मिल पाएगा।

ऐसे में किसानों के लिए मूंग और उड़द के रोगों की पहचान और उनकी रोकथाम की जानकारी ज़रूर होनी चाहिए।

मूंग में रोग एवं कीट नियंत्रण, खरपतवार से भी जैविक और रासायनिक तरीके से ऐसे पाएं छुटकारा

भारत के कई राज्यों के किसान मूंग की खेती करते हैं। प्रमुख दलहनी फसल होने की वजह से इसकी बुवाई बड़े पैमाने पर की जाती है और किसानों को इससे लाभ भी अच्छा मिलता है लेकिन कई बार फसल सम्बन्धी समस्याओं के चलते वे इस लाभ का लुत्फ़ नहीं उठा पाते हैं।

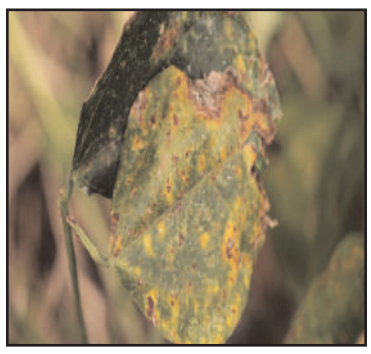

आरटी डेस्क।

भारत के कई राज्यों के किसान मूंग की खेती करते हैं। प्रमुख दलहनी फसल होने की वजह से इसकी बुवाई बड़े पैमाने पर की जाती है और किसानों को इससे लाभ भी अच्छा मिलता है लेकिन कई बार फसल सम्बन्धी समस्याओं के चलते वे इस लाभ का लुत्फ़ नहीं उठा पाते हैं। इन्हीं में से एक है मूंग में लगने वाले प्रमुख कीट और रोग की समस्या, जिसका अगर समय रहते उपाय न किया गया तो पूरी फसल और लगने वाली लागत बर्बाद हो सकती है।

हम आपको मूंग में लगने वाले कुछ प्रमुख कीट और रोग की जानकारी देने जा रहे हैं और बताएंगे कि आप इनकी रोकथाम कैसे कर सकते हैं। इसके साथ ही हम आपको यह भी बताएंगे की अनचाहे खरपतवार से भी आप कैसे छुटकारा पाकर ज्यादा से ज्यादा उत्पादन ले सकते हैं। यहां हम जैविक विधि के साथ रासायनिक विधि से भी मूंग की खेती में खरपरवार नियंत्रण की विस्तृत जानकारी दे रहे हैं।

मूंग के प्रमुख रोग और उनकी रोकथाम

चितेरी रोग

पीला चितेरी रोग एक विषाणु जनित रोग है जिसमें पत्तियों पर पीले धब्बे पड़ जाते हैं और बाद में पत्तियां पूरी तरह से ही पीली पड़ जाती हैं। यह रोग तेजी से फैलता है।

रोकथाम

यह रोग मूंग की फसल में सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। ऐस में इसकी रोकथाम के लिए खेत में आवश्यकतानुसार ऑक्सीडेमेटान मेथाइल या डायमेथोएट को पानी में घोलकर छिड़क दें।

पत्ती रोग

इस रोग में पत्तों पर झुर्रियां सी आ जाती हैं। यह भी एक विषाणु जनित रोग है। इसमें पत्तियां अधिक मोटी और खुरदरी दिखाई देने लगती हैं।

रोकथाम

किसान इस रोग के नियंत्रण के लिए फसल से रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर जला दें। इसके साथ ही किसान कीटनाशक का भी छिड़काव कर सकते हैं।

सरकोस्पोरा पत्र बुंदकी रोग

यह मूंग की फसल में लगने वाला एक खास रोग है जिसके प्रकोप से पैदावार में काफी नुकसान होता है। इसमें पत्तियों पर भूरे गहरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं।

रोकथाम

किसान फसल को इस रोग से बचाने के लिए बुवाई से पहले कैप्टन या थिरम कवकनाशी से बीज को जरूर उपचारित करें।

चूर्णी फफूंद रोग

इस रोग में पौधों की निचली पत्तियों पर गहरे धब्बे पड़ जाते हैं और बाद में पत्तों पर छोटे-छोटे सफेद बिंदु दिखाई देने लगते हैं। बाद में ये छोटे सफेद बिंदु बड़े सफेद धब्बे बन जाते हैं।

आपको बता दें कि यह रोग गर्म या शुष्क वातावरण में तेजी से फैलता है।

रोकथाम

किसान इस रोग के प्रकोप से पौधों को बचाने के लिए घुलनशील गंधक का इस्तेमाल करें। रोग का प्रकोप ज्यादा होने पर आवश्यकतानुसार कार्बेन्डाजिम या केराथेन को पानी में घोलकर छिड़क दें।

पर्ण संकुचन रोग

इस रोग में पत्तियों का विकास रुक जाता है। पत्तियों में पोषक तत्व की कमी हो जाती है। नतीजतन, मूंग की उपज में भी कमी आती है। यह भी एक विषाणु रोग है।

रोकथाम

किसान फसल को रोग से बचाने के लिए बीजों को इमिडाक्रोपिरिड से उपचारित कर लें और उसके बाद ही बुवाई करें। साथ ही बुवाई के लगभग 15 दिन बाद कीटनाशक का छिड़काव कर दें।

पीला मोजेक रोग

मोजेक रोग में पत्तियां सिकुड़ने लगती हैं और उनपर फफोले पड़ने लगते हैं। ऐसे में पौधों का विकास भी रुक जाता है।

रोकथाम

किसान अपनी मूंग की फसल को बचाने के लिए प्रमाणित बीज से ही बुवाई करें। इसके साथ ही रोगी पौधों को उखाड़कर जला दें।

मूंग के प्रमुख कीट और उनकी रोकथाम

थ्रिप्स या रसचूसक कीट

रसचूसक कीट या थ्रिप्स कहलाने वाले कीट मूंग के पौधों का रस चूसकर उन्हें नुकसान पहुंचाते हैं। इसके प्रकोप से पौधे पीले, कमजोर हो जाते हैं। उनमें विकार भी आ जाता है।

रोकथाम

किसान बुवाई से पहले बीज का थायोमेथोक्जम 70 डब्ल्यू एस 2 मिलीलीटर प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचार करें। आपको बता दें कि थायोमेथोक्जम 25 डब्ल्यू जी 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़कने से भी थ्रिप्स की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।

माहू

फसल में माहू कीट के शिशु और प्रौढ़ पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूल-फल से रस चूसकर उसे कमजोर बना देते हैं।

रोकथाम

किसान इस कीट से फसल सुरक्षा के लिए डायमिथोएट 1000 मिलीलीटर प्रति 600 लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल प्रति 600 लीटर पानी में 125 मिलीलीटर के हिसाब से प्रति हेक्टेयर में छिड़काव करें।

सफेद मक्खी

सफेद मक्खी एक बहुभक्षी कीट है जो फसल को शुरुआती अवस्था से लेकर आखिरी अवस्था तक नुकसान पहुंचाता है। इसके प्रकोप से उत्पादन में कमी आती है।

रोकथाम

माहू कीट नियंत्रण की विधि का इस्तेमाल किसान इस कीट से भी छुटकारा पा सकते हैं।

मूंग की खेती में रासायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण

मूंग की बुवाई के लगभग 20 से 30 दिन तक किसान खरपतवार पर खास ध्यान दें। ऐसा इसलिए क्योंकि शुरुआती दौर में खरपतवार फसल को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाते हैं। वहीं अधिक समस्या होने पर खरपतवारनाशक रसायन का छिड़काव करें। किसान पेन्डीमिथालीन 30 ई सी, 750 से 1000 ग्राम मात्रा प्रति हैक्टेयर बुवाई के 3 दिन के अंदर ही इस्तेमाल करें।

मूंग की खेती में जैविक विधि से खरपतवार नियंत्रण

अगर किसान जैविक विधि से मूंग की खेती में खरपतवार प्रबंधन करना चाहते हैं तो इसके लिए वे गर्मियों में अपने खेत की गहरी जुताई करें। इसके साथ ही वे खेत में सड़ी गोबर की खाद का इस्तेमाल करें। किस्मों के चुनाव पर भी जरूर ध्यान दें।

खरपतवार से निपटने के लिए बुवाई के लगभग 20 दिन बाद निराई कर दें। इसके 45 दिन के बाद एक बार फिर निराई कर दें। किसान उचित फसल चक्र चुनें। इसके साथ ही किसान जैविक विधि से खरपतवार प्रबंधन के लिए मल्चिंग का इस्तेमाल कर सकते हैं।

मरीज एडमिट नहीं होने पर जिम्मेदारों पर होगी सख्त कार्रवाई- योगी आदित्यनाथ

सीएम योगी ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में प्रदेश के अस्पतालों में ओपीडी सेवाएं स्थगित हैं। ऐसे में टेलीकन्सल्टेशन को बढ़ावा दिया जाए। कोविड होम आइसोलेशन और नॉन कोविड मरीजों के लिए विशेषज्ञ चिकित्सकों की सूची/संपर्क माध्यम का व्यापक प्रचार-प्रसार कराया जाए।

लखनऊ, ब्यूरो। सीएम योगी ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में प्रदेश के अस्पतालों में ओपीडी सेवाएं स्थगित हैं। ऐसे में टेलीकन्सल्टेशन को बढ़ावा दिया जाए। कोविड होम आइसोलेशन और नॉन कोविड मरीजों के लिए विशेषज्ञ७ चिकित्सकों की सूची/संपर्क माध्यम का व्यापक प्रचार-प्रसार कराया जाए। सीएम योगी ने कहा कि इंटीग्रेटेड कमांड एन्ड कंट्रोल सेंटर से मरीज को जो अस्पताल आवंटित किया गया है, वहां उसे एडमिट करना अनिवार्य है। जिलाधिकारी यह सुनिश्चित कराएं। अन्यथा की दशा में जिम्मेदार के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। मुख्यमंत्री कार्यालय से इसकी मॉनिटरिंग की जाए।

सीएम योगी ने कहा कि होम आइसोलेशन में इलाजरत मरीजों से सीएम हेल्पलाइन के माध्यम से हर दिन संवाद बनाया जाए। उन्हें न्यूनतम एक सप्ताह की अवधि के लिए मेडिकल किट उपलब्ध कराया जाए। स्वास्थ्य मंत्री के स्तर से मेडिकल किट वितरण व्यवस्था की जिलेवार समीक्षा की जाए। सीएमओ की जवाबदेही तय की जाए। दवाओं का कोई अभाव नहीं है। अस्पतालों में इलाजरत मरीजों से हर दिन संवाद बनाया जाए। उन्होंने कहा कि ऑक्सीजन की आपूर्ति हर दिन बढ़ती जा रही है। रुड़की, काशीपुर, मोदीनगर के साथ-साथ बोकारो आदि प्लांट से लगातार आपूर्ति सुनिश्चित कराई जा रही है। एमएसएमई इकाइयों को भी सीधे अस्पतालों से लिंक कर आपूर्ति कराई जा रही है। टाटा और रिलायंस समूहों की ओर से भी प्रदेश को ऑक्सीजन आपूर्ति का प्रस्ताव मिला है। सम्बंधित लोगों से संवाद कर तत्काल आपूर्ति सुनिश्चित कराई जाए।

उन्होंने कहा कि सभी जिलों के प्रत्येक छोटे-बड़े अस्पताल की स्थिति पर नजर रखी जाए। जिसे भी जरूरत होगी, ऑक्सीजन जरूर मुहैया कराई जाए। ऑक्सीजन के सुचारु आपूर्ति-वितरण के लिए प्रदेश के सात संस्थाओं द्वारा ऑक्सीजन की ऑडिट भी कराई जा रही है।

सीएम ने कहा कि ऑक्सीजन टैंकरों की संख्या बढ़ाये जाने के सम्बंध में विशेष प्रयास की जरूरत है। इसमें भारत सरकार से भी सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। ऑक्सीजन टैंकर को जीपीएस से जोड़ते हुए इनके संचालन की ऑनलाइन मॉनिटरिंग की जाए।

उन्होंने कहा कि कोई भी सरकारी अथवा निजी अस्पताल बेड उपलब्ध होने पर कोविड पॉजिटिव मरीज को भर्ती के लिए मना नहीं कर सकता है। यदि सरकारी अस्पताल में बेड उपलब्ध नहीं है, तो संबंधित अस्पताल उसे निजी चिकित्सालय में रेफर करेगा। निजी हॉस्पिटल में मरीज भुगतान के आधार पर उपचार कराने में यदि सक्षम नहीं होगा, तो ऐसी दशा में राज्य सरकार आयुष्मान भारत योजना के तहत अनुमन्य दर पर वहां उसके इलाज का भुगतान करेगी।

योगी ने कहा कि हर दिन की परिस्थितियों पर दृष्टि रखते हुए शासन द्वारा हर दिन नीतिगत प्रयास किए जा रहे हैं। सभी मंडलायुक्त/जिलाधिकारी शासन के सतत संपर्क में रहें। व्यापक जनहित में कोई निर्णय लेने से पूर्व शासन को अवगत जरूर कराएं। आमजन को सुविधा/राहत देने के संबंध में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें। योगी ने कहा कि कोविड से लड़ाई जीत चुके बहुत से लोग मरीजों की सेवा के इच्छुक हैं। ऐसे लोगों को प्रोत्साहित करने की जरूरत है। इनकी जिलेवार सूची तैयार कराएं। इनमें चिकित्सक होंगे, सैन्य कर्मी होंगे, पैरामेडिकल स्टाफ आदि हो सकते हैं।

आवश्यकतानुसार अस्पतालों आदि में इनकी सेवाएं ली जाएं। योगी ने कहा कि रेमेडेसिविर जैसी किसी भी जीवनरक्षक दवा का प्रदेश में अभाव नहीं है। हर दिन इसकी आपूर्ति बढ़ रही है। जिलों की मांग को देखते हुए रेमेडेसिविर के पर्याप्त वॉयल उपलब्ध कराए जाएं। सरकारी अस्पतालों में यह इंजेक्शन नि:शुल्क उपलब्ध है, जरूरत होगी तो निजी अस्पतालों को भी तय दरों पर रेमेडेसिविर मुहैया कराई जाए। इसके साथ-साथ इसकी कालाबाजारी पर पुलिस लगातार नजर रखे।

यूपी के 47 जिलों में पीएम केयर्स फंड से लगेगा ऑक्सीजन प्लांट

यूपी के 47 जिलों में प्रधानमंत्री केयर्स फंड से चिकित्सीय ऑक्सीजन प्लांट लगाए जाएंगे। इसके लिए बजट आवंटन की सैद्धांतिक मंजूरी दे दी गई है।

लखनऊ, विशेष संवादाता। यूपी के 47 जिलों में प्रधानमंत्री केयर्स फंड से चिकित्सीय ऑक्सीजन प्लांट लगाए जाएंगे। इसके लिए बजट आवंटन की सैद्धांतिक मंजूरी दे दी गई है। प्रधानमंत्री के निर्देश पर इस संयंत्रों को जल्द शुरू कर दिया जाएगा। इन संयंत्रों से जिला स्तर पर ऑक्सीजन की उपलब्धता सुनिश्चित करने में काफी मदद मिलेगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ट्वीट कर इसके लिए प्रधानमंत्री का आभार जताया है।

मुख्यमंत्री ने कहा है कि प्रधानमंत्री द्वारा 'पीसम-केयर्स फंड' से देश भर के जिला मुख्यालयों में सरकारी अस्पतालों में 551 पीएसए ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट की स्थापना का किया गया फैसला अभिनंदनीय है। इनकी स्थापना से पूरे देश में ऑक्सीजन की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित की जा सकेगी। पीएम केयर्स फंड ने इस साल की शुरुआत में देश में सार्वजनिक स्वास्थ्य केंद्रों पर अतिरिक्त 162 डेडिकेटेड प्रेशर स्विंग ऐड्सॉर्प्शन (पीएसए) मेडिकल ऑक्सीजन उत्पादन संयंत्र लगाने के लिए 201.58 करोड़ रुपये आवंटित किए थे। उतर प्रदेश में कुल 47 और उतराखंड में 7 जिलों में चिकित्सकीय आक्सीजन के इन संयंत्रो को लगाया जाएगा।

यूपी के इन जिलों में लगेगा प्लांट

लखनऊ, वाराणसी, गोरखपुर, आगरा, अलीगढ़, आजमगढ़, बहराइच, बलिया, बांदा, बाराबंकी, बरेली, बस्ती, बदायूं, बुलंदशहर, देवरिया, इटावा, अयोध्या, फर्रुखाबाद, फतेहपुर, फिरोजाबाद, गौतमबुद्धनगर, गाजियाबाद, गाजीपुर, गोंडा, हरदोई, जालौन, जौनपुर, झांसी, कन्नौज, कानपुर नगर, खीरी, ललितपुर, मथुरा, मेरठ, मिर्जापुर, मुरादाबाद, मुफ्फरनगर, पीलीभीत, प्रतापगढ़, प्रयागराज, रायबरेली, रामपुर, सहारनपुर, शाहजहांपुर, सीतापुर, सुल्तानपुर व उन्नाव

क्या होगा फायदा

जिला मुख्यालयों के सरकारी अस्पतालों में पीएसए ऑक्सीजन उत्पादन संयंत्र स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को और मजबूत करना है। इससे

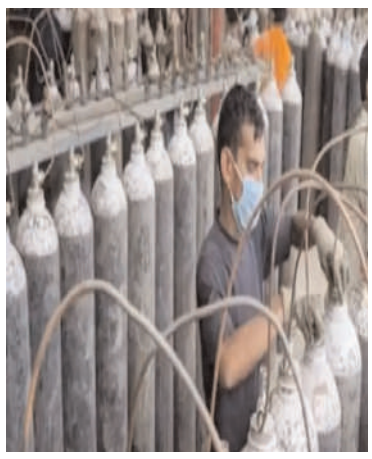

प्रत्येक अस्पतालों में कैप्टिव ऑक्सीजन उत्पादन की सुविधा बनी रहेगी। इस तरह से अपने स्तर पर ऑक्सीजन उत्पादन सुविधा से इन अस्पतालों और जिले की दिन-प्रतिदिन की मेडिकल ऑक्सीजन की जरूरतें पूरी हो सकेंगी। इसके अलावा, तरल चिकित्सा ऑक्सीजन (एलएमओ) कैप्टिव ऑक्सीजन उत्पादन के 'टॉप अप' के रूप में काम करेगा।

इस तरह की प्रणाली यह सुनिश्चित कर सकेगी कि जिले के सरकारी अस्पतालों को ऑक्सीजन की आपूर्ति में अचानक व्यवधान न उत्पन्न हो सके और कोरोना मरीजों व अन्य जरूरतमंद मरीजों के लिए निर्बाध रूप से पर्याप्त ऑक्सीजन मिल सके।

अमेठी पंचायत चुनाव- पहले दो घंटे में हुई 9.30 प्रतिशत वोटिंग

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के लिए अमेठी जिले में सुबह 7-00 बजे से वोटिंग शुरू हो गई। सुबह 9 बजे तक 9.30 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

अमेठी, विशेष संवादाता। त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के लिए अमेठी जिले में सुबह 7:00 बजे से वोटिंग शुरू हो गई। सुबह 9 बजे तक 9.30 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। कोरोना महामारी संक्रमण के बीच भी जिले के सभी 2430 बूथों पर सुबह से ही मतदाता वोट डालने के लिए जुट गए। गौरीगंज विकास क्षेत्र के गुर्जर टोला बूथ पर फर्जी वोटिंग की शिकायत पर दो युवाओं को गिरफ्तार किया गया है। वही संग्रामपुर क्षेत्र के भावलपुर में बूथ के बाहर प्रत्याशियों की आपसी भिड़ंत हो गई। इसके बाद सक्रिय पुलिस ने लोगों को बाहर खदेड़ दिया। मतदान को लेकर विशेषकर युवा मतदाताओं में काफी उत्साह देखा जा रहा है। डीएम अरुण कुमार व एसपी दिनेश कुमार ने गौरीगंज विकास क्षेत्र के तुलसीपुर बूथ पर पहुंचकर मतदान का जायजा लिया और लोगों से सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने की अपील की। डीएम अरुण कुमार ने बताया कि पूरे जिले में शांतिपूर्ण ढंग से मतदान चल रहा है।

संपादक ... की कलम से

कर भला तो हो भला

एस.वी.सिंह उजागर

कहते हैं कि यदि आपने जरूरत के वक्त निस्वार्थ भाव से किसी की मदद की है, तो वह एक न एक दिन लौट कर जरूर आती है। कोविड की दूसरी लहर के भयावह आघात से जूझ रहे भारत के लिए सुकून की बात है कि हमारे विदेश मंत्री की एक अपील पर दुनिया भर के देश भारत की मदद के लिए खड़े हो गए हैं। मदद के लिए आगे आने वाले देशों की लंबी कतार में आज हमारे छोटे से पड़ोसी देश भूटान से लेकर चीन, सिंगापुर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, यूरोपीय कमीशन, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका जैसे देश खड़े हो गए हैं। हमने अमेरिका का नाम अंत में लिया, जबकि वह हमारे सबसे बड़े व्यापार साझीदारों में एक है और हम यह मानते रहे हैं कि अमेरिका हमारा सबसे बड़ा सहयोगी देश है। पिछली सदी के अंतिम दशक से अब तक भारत और अमेरिका के बीच रिश्ते निरंतर प्रगाढ़तर हुए हैं। दोनों देशों में सरकारें चाहे जिस भी पार्टी की हों, द्विपक्षीय मामलों में उन्होंने लगातार आगे की ओर ही देखा है। वास्तव में यह विश्व के दो सबसे बड़े और परिपक्व लोकतंत्रों की सहज स्वाभाविक मैत्री-यात्रा थी, लेकिन गत जनवरी में अमेरिका में आई नई सरकार ने इस यात्रा में कुछ ब्रेक जैसा लगा दिया।

कहते हैं कि यदि आपने जरूरत के वक्त निस्वार्थ भाव से किसी की मदद की है, तो वह एक न एक दिन लौट कर जरूर आती है। कोविड की दूसरी लहर के भयावह आघात से जूझ रहे भारत के लिए सुकून की बात है कि हमारे विदेश मंत्री की एक अपील पर दुनिया भर के देश भारत की मदद के लिए खड़े हो गए हैं।

पिछले वर्ष जब कोविड ने दुनिया के तमाम देशों को झुलसाना शुरू किया और उसकी लपेट में सबसे ज्यादा अमेरिका आया, तब भारत ने सच्चे मित्र धर्म का पालन करते हुए उसे हाइड्रोक्लोरोक्विन जैसी दवा की आपूर्ति की थी। तब के अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत का आभार प्रकट किया था और सार्वजनिक रूप से उस दवा की तारीफ की थी। उस दवा का सेवन सिर्फ ट्रंप ने नहीं, अमेरिकी जनता ने भी किया था। इसलिए इस बार भारत को उम्मीद थी कि जब संकट हमारे ऊपर आया है, तो अमेरिका बिना कहे आगे आएगा और मदद करेगा। पहले उसने 'अमेरिका फर्स्ट' की नीति पर चलने का तर्क दिया और बाद में हमारे विदेश मंत्री एस जयशंकर की वैश्विक अपील पर भी गोलमोल-सा जवाब ही दिया, लेकिन जब रविवार की रात हमारे सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल ने अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार से वार्ता की, तब अमेरिका की आंखें खुलीं।

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन को कहना पड़ा, 'जिस तरह महामारी की शुरुआत में भारत ने अमेरिका की मदद की थी, उसी तरह जरूरत की इस घड़ी में हम भारत की मदद करने को लेकर दृढ़-संकल्प हैं।' यह हृदय-परिवर्तन इसलिए हुआ कि भारत की एक अपील पर दुनिया भर के देश हमारी मदद के लिए आगे आ गए और अमेरिका की खिंचाई होने लग गई। वह अलग-थलग पड़ने लगा। यही भारत की ताकत है। 135 करोड़ भारतीयों की ताकत। आज अमेरिका भारत को कोविशील्ड वैक्सीन के उत्पादन हेतु कच्चा माल देने को तत्पर है।

बदइंतजामियों का जिम्मेदार कौन?

भारत में प्रतिदिन कोरोना मामले रिकॉर्ड 3,49,691 तक पहुंच गए हैं और इलाजरत मरीजों की संख्या 26 लाख के पार चली गई, लेकिन तब भी हमें पूरी हिम्मत से काम लेना है। कितनी भी कठिनाई आए, हमें उम्मीद का दामन नहीं छोड़ना है।

आरटी डेस्क।

भारत में प्रतिदिन कोरोना मामले रिकॉर्ड 3,49,691 तक पहुंच गए हैं और इलाजरत मरीजों की संख्या 26 लाख के पार चली गई, लेकिन तब भी हमें पूरी हिम्मत से काम लेना है। कितनी भी कठिनाई आए, हमें उम्मीद का दामन नहीं छोड़ना है। यह एक-एक व्यक्ति के लिए सोचने का समय है कि वह समस्याओं का हिस्सा है या समाधान खोजती-करती सेना में शामिल है। जिस तरह से इलाज के जरूरी संसाधनों का अभाव हुआ है, जिस तरह की बदइंतजामियों को हमने देखा है, उन्हें भुलाना कठिन है।

आपदा जब हमारे दरवाजे तोड़ने लगे और तब जिन लोगों की नींद खुले, ऐसे लोगों को यह देश जिम्मेदारी वाले पदों पर नहीं रख सकता। सरकार और गली-मुहल्ले के उन चेहरों को पहचान लेना चाहिए, जिन्होंने आपदा के समय लोगों को छला है। यह महामारी हमारे चरित्र के निंदनीय पहलुओं को सरेराह कर दे रही है। समाज के लापरवाह और निर्दयी चेहरों को देर-सबेर शिकंजे में लेना होगा।

अभाव और दर्द की हर तरफ बिखरी गाथाएं गवाह हैं, निश्चित ही देश में जमकर जमाखोरी और कालाबाजारी हुई है, हमारी सरकारों से आने वाले समय में जरूर पूछा जाएगा कि जब लूट मची थी, तब लुटेरों का हिसाब-किताब कितना किया गया? जमाखोरों के खिलाफ सख्ती की बात प्रधानमंत्री की बैठक में भी उठी थी, लेकिन जमीन पर कितनी सख्ती हुई? हमारी व्यवस्था में आम और खास का फर्क तो हर जगह और हर स्तर पर है, इसमें भी संदेह नहीं कि अनेक ऐसे खास लोग ही लूट या जमाखोरी की स्थिति पैदा करते हैं। जब व्यवस्था के कुछ खास हिस्से जमाखोरी के लिए माहौल तैयार कर रहे हों, तब जमाखोरों के खिलाफ कदम कितनी ईमानदारी से उठेंगे? इतिहास में दर्ज किया जाएगा कि इस देश में जब जरूरत थी, तब लोगों को कई गुना कीमत पर दवाइयां बेची गईं और दोगुनी कीमत पर नारियल पानी जैसा सामान्य पदार्थ।

कच्चे नारियल के लिए किसानों को बमुश्किल दस रुपये प्रति नग मिलते हैं, लेकिन यही नारियल सामान्य ठेले वालों ने आठ गुना मूल्य पर बेचे हैं? मतलब कई अस्पतालों, कंपनियों से लेकर ठेलों तक ने यह बता दिया है कि मौके का फायदा उठाना क्या होता है? इसमें सरकार क्या कर सकती थी, यह नीति निर्धारकों को आगे ध्यान में रखना होगा। कमियां दर्ज हो चुकी हैं, लेकिन यह समय आपस में लड़ने-भिड़ने का नहीं है, किसी डॉक्टर को लहूलुहान करने का नहीं है, जैसा कि बक्सर में किया गया।

यह समय अफवाह फैलाने या सरकार या किसी नेता को अपशब्द कहने का भी नहीं है, यह समय शुद्ध रूप से रोगियों की सेवा का है। जो बीमार हैं, उनका दिल तो यही गुहार लगा रहा होगा कि अभी लड़ो मत, जल्दी से जल्दी मेरा हर संभव इलाज करो।

जो देश अस्पताल में है, उसे सही इलाज मिले और जो देश अस्पताल के बाहर मदद मांग रहा है, उसे हर संभव मदद मिले, मानवीयता यही है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत देश भर में मई-जून में प्रति व्यक्ति पांच किलो अतिरिक्त अन्न (चावल/गेहूं) मुफ्त दिया जाना है। यह सुनिश्चित करना होगा कि खाद्य और राशन की व्यवस्था मुकम्मल रहे।

जहां किसी भी सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर अनर्गल या लोगों को अवसाद में डालने वाले पोस्ट पर लगाम लगे, वहीं सही आलोचनाओं के प्रकाश में आगे बढ़ चलना होगा।

कोरोना काल में कृषि क्षेत्र को हुये नुकसान से बेहाल किसान

आप इस बात से कितना इत्तेफाक रखते हैं। यह आपकी मनोदशा पर निर्भर करता है, लेकिन जहां तक हमारा मानना है कि आप भी इस बात को खारिज नहीं कर पाएंगे कि हम कोरोना की पहली लहर का दट कर सामना कर उस पर लगभग-लगभग फतह पा ही चुके थे, मगर इससे पहले की सब कुछ दुरूस्त हो पाता। कंबख्त, इस कोरोना की दूसरी लहर ने एक बार फिर से हमें उसी राह पर लाकर खड़ा कर दिया, जहां से पहले कभी हमने अपने सफर का आगाज किया था।

आरटी डेस्क, कृषि संवादाता। आप इस बात से कितना इत्तेफाक रखते हैं। यह आपकी मनोदशा पर निर्भर करता है, लेकिन जहां तक हमारा मानना है कि आप भी इस बात को खारिज नहीं कर पाएंगे कि हम कोरोना की पहली लहर का दट कर सामना कर उस पर लगभग-लगभग फतह पा ही चुके थे, मगर इससे पहले की सब कुछ दुरूस्त हो पाता। कंबख्त, इस कोरोना की दूसरी लहर ने एक बार फिर से हमें उसी राह पर लाकर खड़ा कर दिया, जहां से पहले कभी हमने अपने सफर का आगाज किया था।

बेशक, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि कोरोना की पहली लहर के दौरान तमाम कल-कारखानों पर ताला ज़ड चुका था। लोग बेरोजगारी का शिकार हो रहे थे। उच्च वर्ग और मध्यम वर्ग ने तो जैसे तैसे अपने आपको संभाल भी लिया, मगर निम्न तबका कोरोना की पहली लहर के दौरान इस कदर चोटिल हुआ कि उसके जख्मों पर कोई मरहम लगाने वाला नहीं रहा। लिहाजा, वे शहरों से यह सोचकर रूखसत हुए कि शायद उन्हें गांव में सपनों का संसार मिल सके, मगर अफसोस ऐसा कुछ नहीं हुआ, क्योंकि इस दौरान अर्थव्यवस्था बुरी तरह घायल हो गई।

सरकार ने तमाम कोशिशें कर ली। सारे दांव चल दिए, मगर हाथ कुछ नहीं लगा, लेकिन यहां एक बात काफी सुर्खियों में रही की कोरोना की पहली लहर के दौरान कृषि क्षेत्र काफी हद तक खुद को संभालने में सफल रही थी। बेशक, वो भी प्रभावित हुई, लेकिन अन्य क्षेत्रों के मुकाबले जब सब अपनी आखिरी सांसें गिनने में मसरूफ हो चुके थे, तो ऐसे में कृषि क्षेत्र का अन्य क्षेत्रों के मुकाबले खुद को संभाल पाना यकीनन काबिल-ए-तारीफ रहा, मगर कोरोना की दूसरी लहर के दौरान कृषि क्षेत्र भी बुरी तरह चोटिल ही रहा।

भारी नुकसान की चपेट में कृषि क्षेत्र

कृषि क्षेत्र भारी नुकसान की चपेट में आ चुका है. किसान बेहाल हैं। बाजार में मांग कम होने की वजह से उनकी फसलों की खरीद कम हो चुकी है। उनकी फसलों को कोई पूछ नहीं रहा है। बेशुमार वजहों के बीच एक वजह यह भी है कि शादी-ब्याह में कोरोना के दौरान सीमित संख्या में लोगों को आमंत्रित करने की वजह से बाजार में सब्जियों और फलों की मांग काफी कम हुई है, जिसका सीधा नुकसान किसानों को हो रहा है। वहीं, किसानों की कुछ फसलें अगर बाजार में पहुंच भी रही है, तो उन्हें उचित कीमत नहीं मिल पा रही है। ऐसे में किसान अब औने पोन दाम में इसे बेचने पर मजबूर हो चुके हैं। आखिर करें तो क्या करें भी क्या। किसानों का कहना है कि फेंकने से अच्छा है, इसे बेच ही दें, ताकि कुछ मुनाफा ही मिल जाए।

क्या कहते हैं अर्थशास्त्री

वहीं, कोरोना की दूसरी लहर में कृषि क्षेत्र को हुए नुकसान के संदर्भ में कृषि अर्थशास्त्री देवेंद्र शर्मा कहते हैं कि पहली लहर के दौरान संक्रमण के मामले गांवों तक नहीं पहुंचे थे, लिहाजा गांवों का आर्थिक पहियां सुचारू रूप से चल रहा था, जिससे कृषि क्षेत्र का भी संचालन प्रभावी रूप से जारी रहा, मगर जब शहरों से मजदूरों व ग्रामीण तबकों के लोगों ने गांव की ओर रूख करना शुरू किया, तो आहिस्ता-आहिस्ता गांवों में संक्रमण के मामले सामने आने लगे, जिसका सीधा असर ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ा और नतीजतन कृषि क्षेत्र अब चौपट हो चुका है।

आलम यह है कि किसान भाइयों को अपनी फसलों को व्यापारियों को औने पौने दाम में बेचने पर मजबूर होना पड़ रहा था। अब किसानों की बदहाली का अंदाजा महज इसी से लगा सकते हैं कि वे अपनी फसलों को फेंकने को तैयार हैं, मगर बेचने को नहीं। अब धान की रोपाई को ही देख लीजिए। इस वक्त यह अपने चरम पर होती है, मगर लगातार लोग संक्रमण के शिकार हो रहे हैं, जिससे उनकी फसलों को बहुत नुकसान हो रहा है। बाजार में किसानों की फसलों को कोई खरीदने वाला नहीं रह गया है।

कृषि क्षेत्र भारी नुकसान की चपेट में आ चुका है. किसान बेहाल हैं। बाजार में मांग कम होने की वजह से उनकी फसलों की खरीद कम हो चुकी है। उनकी फसलों को कोई पूछ नहीं रहा है। बेशुमार वजहों के बीच एक वजह यह भी है कि शादी-ब्याह में कोरोना के दौरान सीमित संख्या में लोगों को आमंत्रित करने की वजह से बाजार में सब्जियों और फलों की मांग काफी कम हुई है, जिसका सीधा नुकसान किसानों को हो रहा है। वहीं, किसानों की कुछ फसलें अगर बाजार में पहुंच भी रही है, तो उन्हें उचित कीमत नहीं मिल पा रही है। ऐसे में किसान अब औने पोन दाम में इसे बेचने पर मजबूर हो चुके हैं। आखिर करें तो क्या करें भी क्या। किसानों का कहना है कि फेंकने से अच्छा है, इसे बेच ही दें, ताकि कुछ मुनाफा ही मिल जाए।

इंडियन स्टूडेंट्स के लिए विदेशों में अध्ययन के बेहतरीन अवसर

(पिछले अंक का शेष -)

आरटी करियर डेस्क।

इंडियन स्टूडेंट्स फॉरेन स्टडीज़ के लिए पास कर सकते हैं ये महत्वपूर्ण एग्जाम्स

आईईएलटीएस

इंटरनेशनल इंग्लिश लैंग्वेज टेस्टिंग सिस्टम शायद उन छात्रों के बीच सबसे लोकप्रिय टेस्ट है जो विदेशों में अपनी पढ़ाई करने की योजना बना रहे हैं। यह भारतीय छात्रों के लिए एक विदेशी प्रवीणता परीक्षा है। आईईएलटीएस टेस्ट को भाषा के स्तर पर जैसे छात्रों के सुनने, पढ़ने, बोलने और लिखने के प्रमुख भाषा कौशल का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से डिजाइन किया गया है। यूएस, यूके, न्यूजीलैंड और कनाडा जैसे देश भारतीय छात्रों के लिए अग्रणी शिक्षा केंद्रों, विश्वविद्यालयों और शैक्षिक संस्थान तथा उच्च शिक्षा कार्यक्रमों में एडमिशन देने के लिए आईईएलटीएस स्कोर को स्वीकार करते हैं।

टॉफेल

टॉफेल या विदेशी भाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा का टेस्ट एक अंग्रेजी दक्षता परीक्षा है जो उम्मीदवार की अंग्रेजी बोलने की क्षमता और समझ का मूल्यांकन करने के लिए आयोजित की जाती है। 9,000 से अधिक कॉलेज, विदेशी विश्वविद्यालय और संस्थान अंग्रेजी दक्षता के प्रमाणपत्र के वैध सबूत के रूप में टॉफेल स्कोर को स्वीकार करते हैं। लगभग 130 टॉफेल के सक्रिय प्रतिभागी हैं जहां अंतरराष्ट्रीय छात्रों को एडमिशन देने के लिए इस परीक्षा के स्कोर को स्वीकार किया जाता है। यह परीक्षा एक अमेरिकी गैर-लाभकारी संगठन परीक्षा शैक्षणिक सेवा (ईटीएस) द्वारा आयोजित की जाती है।

जीआरई

स्नातक रिकार्ड परीक्षा (ग्रेजुएट रिकॉर्ड एग्जामिनेशन), को आम तौर पर जीआरई टेस्ट के रूप में जाना जाता है. दुनिया भर के कई लोकप्रिय और प्रतिष्ठित बी-स्कूलों, विश्वविद्यालयों और शैक्षिक संस्थानों द्वारा स्वीकार किए जाने वाला यह मानकीकृत प्रवेश परीक्षा है। जीआरई टेस्ट शैक्षिक परीक्षण सेवा (ईटीएस) द्वारा प्रशासित और आयोजित किया जाता है और शैक्षिक संस्थानों में प्रवेश प्रक्रिया के लिए एकेडमिक प्रोफाइल और विभिन्न छात्रों की दक्षता की तुलना में सहायक होता है।

जीमैट

जीमैट (ग्रेजुएट मैनेजमेंट एडमिशन टेस्ट) एक वैश्विक स्तर पर स्वीकृत एमबीए प्रवेश परीक्षा है जिसके माध्यम से एमबीए उम्मीदवारों को स्क्रीनिंग, शॉर्टलिस्ट और प्रवेश के लिए चुना जाता है। स्नातक प्रबंधन प्रवेश परिषद (जीएमएसी,ग्रेजुएट मैनेजमेंट एडमिशन काउंसिल) द्वारा आयोजित जीमैट एक कंप्यूटर अनुकूली परीक्षण है जो मात्रात्मक, विश्लेषणात्मक, लेखन और मौखिक परीक्षण के साथ-साथ एमबीए उम्मीदवार के पढ़ने के कौशल का परीक्षण करता है।

एसएटी

शैक्षिक आकलन परीक्षा (स्कॉलिस्टिक असेसमेंट टेस्ट)विदेशों में उच्च शिक्षा लेने की योजना बनाने वाले छात्रों के लिए एक मानकीकृत परीक्षा है। प्रारंभ में अमेरिका में उच्च शिक्षा के लिए कॉलेजों / विश्वविद्यालयों में शामिल होने के इच्छुक छात्रों के लिए एसएटी को एक सामान्य प्रवेश परीक्षा के रूप में विकसित किया गया था। वर्तमान में कॉलेज बोर्ड द्वारा आयोजित, एसएटी परीक्षा विदेशी विश्वविद्यालयों में ग्रेजुएट कोर्सेज में एडमिशन के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है। सामान्य एसएटी परीक्षणों के अलावा, उम्मीदवार किसी विशेष विषय कोर्स / प्रोग्राम के लिए अपनी उम्मीदवारी का समर्थन करने के लिए संबंधित विषय या कोर्स में एसएटी का टेस्ट भी दे सकते हैं।

एसीटी

अमेरिकन कॉलेज टेस्ट एक मानकीकृत टेस्ट है जो अमेरिकी कॉलेजों में प्रवेश के लिए आवेदन करने वाले छात्रों की एकेद्यिल तैयारी का आकलन करता है। एसीटी मानकीकृत टेस्ट का उद्देश्य उच्च विद्यालय में एडमिशन की मांग कर रहे छात्रों के ज्ञान को परखना है।

सीएई

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय श्वस्हरु (इएसओएल, अन्य भाषाओं के वक्ताओं के लिए अंग्रेजी) द्वारा ऑफ़र किया गया एक टेस्ट है। कैम्ब्रिज इंग्लिश = एडवांस्ड (सीएई) टेस्ट एक मानकीकृत अंग्रेजी दक्षता परीक्षण है जो पढ़ने, लिखने, सुनने और बोलने के अतिरिक्त सभी भाषा कौशल का आकलन करता है। विदेशी देशों में जटिल एकेडमिक और प्रोफेशनल ड्यूटी के निर्वाह हेतु आवश्यक अंग्रेजी भाषा में कम्युनिकेशन स्किल का मूल्यांकन करने के लिए कैम्ब्रिज के विशेषज्ञों द्वारा सीएई टेस्ट को विकसित किया गया है।

एलएसएटी

लॉ स्कूल एडमिशन टेस्ट संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और कई अन्य देशों में कानून की शिक्षा को आगे बढ़ाने की योजना बनाने वाले छात्रों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण मानकीकृत टेस्ट है। इस टेस्ट को लॉ स्कूल एडमिशन काउंसिल (एलएसएसी) द्वारा प्रबंधित और प्रशासित किया जाता है। यह सभी लॉ स्कूल उम्मीदवारों के ज्ञान और प्रतिभा का आकलन समान रूप से करता है। एलएसएटी में अच्छा स्कोर भारतीय छात्रों के लिए किसी भी अंग्रेजी भाषी शिक्षा केंद्र के बड़े प्रतिष्ठित कानून स्कूलों में एडमिशन लेने में मददगार साबित होता है।

पियरसन टेस्ट

पियरसन टेस्ट ऑफ इंग्लिश एकेडमिक अथवा द पीटीई एकेडमिक टेस्ट विदेशों में हायर स्टडीज के इच्छुक छात्रों के लिए एक भाषा कुशल परीक्षा (लैंग्वेज प्रोफिसिएन्सी टेस्ट) है। पीटीई पियरसन द्वारा आयोजित एक कम्प्यूटरीकृत टेस्ट है जो गैर-मूल के अंग्रेजी बोलने वालों (या जिनकी मातृभाषा अंग्रेजी नहीं है) की अंग्रेजी भाषा प्रवीणता का मूल्यांकन करता है। पीटीई परीक्षा के परिणाम दुनिया भर के विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों द्वारा लगभग सभी प्रमुख अंग्रेजी बोलने वाले देशों में व्यापक रूप से स्वीकार किए जाते हैं. इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया सहित कई देश शामिल हैं।

विदेशों में अध्ययन करने का महत्त्व

हर साल, प्रवेश के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों में आवेदन करने वाले भारतीय छात्रों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, चाहे वह ग्रेजुएशन लेवल की पढ़ाई हो या पोस्ट ग्रेजुएशन लेवल की। वैसे आम तौर पर इसे ब्रेन ड्रेन की संज्ञा दी जाती है लेकिन अगर गौर से सोचा जाय तो इससे छात्रों के करियर में ग्रोथ की संभावना भी रहती है। इसलिए हमें विदेशों में अध्ययन करने के उज्ज्वल पक्ष पर

भी विचार करना चाहिए। विदेशों में पढ़ाई करने के कुछ प्रमुख फायदों पर नजर डालते हैं।

इंडियन स्टूडेंट्स के लिए विदेशों में सही कोर्स या कॉलेज चुनने के टिप्स

जब विदेशों में पढ़ाई की बात की जाती है तो छात्रों के समक्ष एक अहम सवाल यह होता है कि हम कैसे जाने कि कौन सा कॉलेज तथा कौन सा कोर्स हमारे लिए सबसे ज्यादा उपयुक्त रहेगा? यूँ तो इस प्रश्न का कोई सरल और निश्चित उत्तर नहीं है। सही कोर्स और कॉलेज हर स्टूडेंट के लिए उनकी प्राथमिकताओं के आधार पर अलग अलग हो सकता है। वैसे सामान्यत: विदेशों में अध्ययन करने की योजना बनाने वाले छात्र सही कॉलेज तथा कोर्स का चयन करने के लिए निम्नांकित बातों पर गौर कर सकते हैं-

भाषा/ अध्ययन का माध्यम

विभिन्न देश उच्च शिक्षा के लिए शिक्षा के माध्यम के रूप में विभिन्न भाषाओं का पालन करते हैं। उदाहरण के लिए, जर्मन विश्वविद्यालय में शामिल होने की योजना बनाने वाले छात्रों के लिए जर्मन भाषा का मूल ज्ञान आवश्यक है। साथ ही उन देशों के लिए जहां अंग्रेजी भाषा में कोर्स कराये जाते हैं, वहां की स्थानीय भाषा का ज्ञान छात्रों द्वारा फैकल्टी के साथ सामंजस्य बैठाने में मदद करता है।

सूटेबल कोर्सेज

ज्यादातर मामलों में जो छात्र विदेशी अध्ययन का विकल्प चुनते हैं वे पहले देश का फैसला करते हैं और फिर एक ऐसे कॉलेज की तलाश करते हैं जो उन्हें वह कोर्स कराता है जिसमें वे रुचि रखते हैं। लेकिन यह एक गलत रणनीति है। इसके बजाए, स्टूडेंट्स को सबसे पहले अपने कोर्स पर विचार करना चहिये और उस कोर्स के लिए जो कॉलेज या देश बेस्ट हो उस पर ध्यान देना चाहिए। प्रत्येक देश के विभिन्न क्षेत्रों की अपनी विशेषता है। इसलिए अपने लिए प्रासंगिक देश के कॉलेजों में ही आवेदन करें।

एजुकेशन कॉस्ट

शिक्षा की लागत न केवल कोर्स फी या ट्यूशन फी तक ही सीमित है जो आप कॉलेज को देते हैं। इसमें रहने की लागत, अध्ययन सामग्री, छात्र वीजा, बोर्डिंग और आवास इत्यादि सहित कुल लागत शामिल है। कोर्स, कॉलेज और जिस देश में आप अध्ययन के लिए निर्णय लेते हैं, उसे देश में रहने पर होने वाला खर्च, यह सब कुछ आपके बजट के भीतर होना चाहिए।

एप्लीकेशन प्रोसेस

विदेशों में अध्ययन करने का निर्णय लेते वक्त छात्रों को वहां की आवेदन प्रक्रिया की भी पूरी जानकारी रखनी चाहिए। आवेदन प्रक्रिया जितनी लम्बी होगी आप उतने ज्यादा समय तक चिंताग्रस्त बने रहेंगे। इस लिए किसी ऐसे देश का चुनाव करें जहाँ एकीकृत आवेदन प्रक्रिया हो।

86 सीनियर मेडिकल स्पेशलिस्ट और सीनियर मेडिकल ऑफिसर पदों की वेकेंसी के लिए करें आवेदन

साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड ने सीनियर मेडिकल स्पेशलिस्ट और सीनियर मेडिकल ऑफिसर के पदों पर भर्ती के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं।

आरटी करियर डेस्क।

साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड भर्ती 2021: साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड ने सीनियर मेडिकल स्पेशलिस्ट और सीनियर मेडिकल ऑफिसर के पदों पर भर्ती के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। इच्छुक और पात्र आवेदक ऑफिस ऑफ़ साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड नौकरी अधिसूचना 2021 के लिए 30 अप्रैल 2021 को या उससे पहले निर्धारित प्रारूप के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण तिथि

- आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि- 30 अप्रैल 2021

साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड सीनियर मेडिकल स्पेशलिस्ट और सीनियर मेडिकल ऑफिसर विवरण-

पदों का नाम व पदों की संख्या

- सीनियर मेडिकल स्पेशलिस्ट (E4)- 52 पद
- मेडिकल स्पेशलिस्ट (E3)- 52 पद
- सीनियर मेडिकल ऑफिसर (E3)- 32 पद
- सीनियर मेडिकल ऑफिसर (डेंटल)E3- 02 पद
- कुल- 86 पद

सीनियर मेडिकल स्पेशलिस्ट एवं सीनियर मेडिकल ऑफिसर के लिए शैक्षणिक योग्यता-

पदों का नाम, योग्यता एवं आयु सीमा

1.सीनियर मेडिकल स्पेशलिस्ट (E4)

जनरल सर्जरी के लिए- मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा मान्यता प्राप्त यूनिवर्सिटी से जनरल मेडिसिन एवं पलमनरी मेडिसिन में न्यूनतम योग्यता एमबीबीएस/पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री/डीएनबी के साथ 3 वर्षों का पोस्ट ग्रेजुएट अनुभव होना चाहिए।

अन्य स्पेशलिस्ट के लिए- उपर्युक्त योग्यता के साथ पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा को भी योग्यता में शामिल किया जाएगा।

2. मेडिकल स्पेशलिस्ट (E3)

- जनरल सर्जरी के लिए - मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा मान्यता प्राप्त यूनिवर्सिटी से जनरल मेडिसिन एवं पलमनरी मेडिसिन में न्यूनतम योग्यता एमबीबीएस/पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री/डीएनबी ।

सीनियर मेडिकल ऑफिसर (डेंटल) श्व3 अन्य स्पेशलिस्ट के लिए- उपर्युक्त योग्यता के साथ पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा को भी योग्यता में शामिल किया जाएगा।

3. सीनियर मेडिकल ऑफिसर (E3)

- मेडिकल काउंसिल ऑफ़ इंडिया द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थान/कॉलेज से एमबीबीएस।

4. सीनियर मेडिकल ऑफिसर (डेंटल) E3

- मेडिकल काउंसिल ऑफ़ इंडिया द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थान/कॉलेज से बीडीएस एवं एक वर्ष का अनुभव।
- आयु सीमा- अनारक्षित (यूआर) उम्मीदवारों के लिए ऊपरी आयु सीमा=
- मेडिकल स्पेशलिस्ट (E4 ग्रेड) जनरल / यूआर के लिए 42 वर्ष।
- मेडिकल ऑफिसर (डेंटल सहित) / मेडिकल स्पेशलिस्ट-ई 3 ग्रेड में) सामान्य / यूआर के लिए 35 वर्ष।

वेतन-

- मेडिकल स्पेशलिस्ट (E4)= 4 70,000- 00 2, 00,000

- मेडिकल स्पेशलिस्ट (E3)= 3 60,000- 1, 80,000
- मेडिकल ऑफिसर (E3)=) 60,000- 80 1, 80,000
- मेडिकल ऑफिसर (दंत चिकित्सा) ई 3=(60,000- 80 1, 80,000

आवेदन कैसे करें-

इच्छुक और पात्र आवेदक ऑफिस ऑफ़ साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (स्श्वष्टरु) नौकरी अधिसूचना 2021 के लिए 30 अप्रैल 2021 को या उससे पहले निर्धारित आवेदन प्रारूप के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

भिंडी की उन्नत खेती कर पायें अधिक मुनाफा, सावधानियों का रखें ध्यान

देश के किसान विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती करते हैं। इनमें भिंडी का एक प्रमुख स्थान है। इसको लेडी फिंगर या ओकरा भी कहा जाता है। किसान भिंडी की अगेती खेती करके खूब मुनाफा कमा सकते है।

आरटी डेस्क, कृषि संवादाता। देश के किसान विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती करते हैं। इनमें भिंडी का एक प्रमुख स्थान है। इसको लेडी फिंगर या ओकरा भी कहा जाता है। किसान भिंडी की अगेती खेती करके खूब मुनाफा कमा सकते है। गर्मियों में बाडार में भिंडी की काफी मांग होती है, क्योंकि इसमें विटामिन ए, सी समेत कई कई पोषक तत्व पाए जाते हैं। आजकल कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कई नई तकनीक द्वारा भिंडी की खेती की जा रही है। इसके साथ ही कई उन्नत किस्म भी विकसित हो चुकी है, जिनके द्वारा किसान भिंडी की फसल से अधिक उपज प्राप्त कर सकते हैं।

उपयुक्त जलवायु

भिंडी की खेती के लिए उष्ण और नम जलवायु की आवश्यकता होती है। इसके बीजों के जमाव के लिए करीब 20 से 25 डिग्री सेन्टीग्रेट तापमान चाहिए होता है।

ध्यान दें कि गर्मी में 42 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा तापमान इसकी फसल को नुकसान पहुंचाता है, क्योंकि ऐसे में इसके फूल गिरने लगते हैं। इसका सीधा असर उपज पर पड़ता है।

उपयुक्त भूमि

भिंडी की खेती सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है, लेकिन हल्की दोमट मिट्टी अच्छी मानी जाती है। इससे जल निकास अच्छी तरह हो जाता है। बता दें कि इसकी खेती के लिए भूमि में कार्बनिक तत्व होना ज़रूरी है, साथ ही पी.एच.मान करीब 6 से 6.8 होना चाहिए। बता दें कि किसानों खेती के पहले एक बार मिट्टी की जांच करा लेनी चाहिए।

खेत की तैयारी

इसकी खेती में सबसे पहले खेत की 2 से 3 बार जुताई कर लें। इसके साथ ही खेत को भुरभुरा करके पाटा चला लें, ताकि खेत समतल हो जाए।

उन्नत किस्में

आजकल भिंडी की कई उन्नत किस्में विकसित हो चुकी हैं। इन किस्मों द्वारा किसान खेती करके फसल की उपज को बढ़ा सकते हैं। किसानों को भिंडी की किस्मों का चयन अपने क्षेत्र की जलवायु और मिट्टी के अनुसार करना चाहिए।

वैसे भिंडी की प्रमुख किस्मों में वर्षा उपहार, अर्का अभय, अर्का अनामिका, परभनी क्रांति शामिल हैं।

निराई-गुड़ाई

भिंडी के खेत को खरपतवार मुक्त रखना है, तो फसल की बुवाई के करीब 15 से 20 दिन बाद पहली निराई-गुड़ाई कर देना चाहिए. बता दें कि भिंडी के खेत में खरपतवार नियंत्रण के लिए रासायनिक का भी प्रयोग कर सकते हैं।

बीज और बीजोपचार

भिंडी की बुवाई के लिए 1 हेक्टेयर खेत में करीब 18 से 20 किग्रा बीज की ज़रूरत पड़ती है। ध्यान दें कि इसके बीजों को बोने से पहले करीब पानी में 24 घंटे तक डुबाकर रखें। इस तरह बीजों का अंकुरण अच्छा होता है। इसके अलावा बीजों को थायरम या कार्बेन्डाजिम से भी उपचारित कर सकते हैं।

रोग नियंत्रण

भिंडी की फसल में अधिकतर येलो मोजेक यानी पीला रोग होने का खतरा बना रहता है. इस रोग में फल, पत्तियां और पौधा पीला पड़ जाता है। अगर इस रोग से फसल को बचाना है, तो आवश्कयतानुसार मेलाथियान को पानी में घोलकर छिड़कते रहें। इससे पीला रोग का खतरा कम हो जाता है।

बुवाई

भिंडी की बुवाई कतारों में करनी चाहिए. ध्यान दें कि खेत में कतारों की दूरी करीब 25 से 30 सेमी होनी चाहिए। इसके साथ ही पौधों की दूरी करीब 15 से 20 सेमी की रखनी चाहिए।

सिंचाई

गर्मियों में भिंडी फसल की सिंचाई 5 से 7 दिन के अंतराल पर करते रहना चाहिए। अगर खेत में नमी न हो, तो फसल की बुवाई से पहले भी एक सिंचाई कर सकते हैं।

तोड़ाई और उपज

भिंडी के फलों की तुड़ाई उसकी किस्म पर निर्भर होती है. वैसे इसकी तुड़ाई करीब 45 से 60 दिनों में शुरू कर देनी चाहिए। ध्यान दें कि तुड़ाई 4 से 5 दिनों के अंतराल पर रोजाना तुड़ाई करें।

उपज

अगर किसान भिंडी की खेती उन्नत किस्मों और अच्छी देखभाल के साथ की जाए, तो इससे प्रति हेक्टेयर करीब 60 से 70 विक्टंल उपज प्राप्त हो जाती है।

प्रिसिजन फार्मिंग से कम लागत में होगी अच्छी पैदावार, जानें इसका तरीका

कहा गया है कि साल 2050 तक दुनिया की आबादी करीब 10 अरब के पार पहुंच सकती है, इसलिए भारत को कृषि उत्पादन के मामले में अपनी पकड़ और मौजूद करनी होगी। ऐसे में किसानों को फसल उत्पादन और मुनाफा बढ़ाने के लिए नई तकनीक का इस्तेमाल करना होगा। इसी कड़ी में एक नई तरह की खेती बेहद कारगर साबित हो रही है, जिसे प्रिसिजन फार्मिंग कहा जाता है। आज हम आपको प्रिसिजन फार्मिंग की जानकारी देने वाले हैं, ताकि किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने में मदद मिल सके।

आरटी डेस्क।

आज के दौर में हर क्षेत्र में नई-नई तकनीक विकसित की जा रही हैं। यह हम सबके जीवन में कुछ इस तरह से शामिल है कि इसके शायद इसके बिना जिंदगी की कल्पना करना मुश्किल है।

इसी तरह किसानों के लिए भी नई तकनीक के बिना खेती करना काफी मुश्किल हो गया है। अगर किसान तकनीक का इस्तेमाल करते हैं, तो उनकी कई समस्याएं मिनटों में खत्म हो जाती है।

कहा गया है कि साल 2050 तक दुनिया की आबादी करीब 10 अरब के पार पहुंच सकती है, इसलिए भारत को कृषि उत्पादन के मामले में अपनी पकड़ और मौजूद करनी होगी। ऐसे में किसानों को फसल उत्पादन और मुनाफा बढ़ाने के लिए नई तकनीक का इस्तेमाल करना होगा।

इसी कड़ी में एक नई तरह की खेती बेहद कारगर साबित हो रही है, जिसे प्रिसिजन फार्मिंग कहा जाता है। आज हम आपको प्रिसिजन फार्मिंग की जानकारी देने वाले हैं, ताकि किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने में मदद मिल सके।

क्या है प्रिसिजन फार्मिंग?

इस फार्मिंग के तहत कई तरह की चुनौतियां आती हैं। यह एक तरह का फार्मिंग मैनेजमेंट सिस्टम है, जिसमें खेती के हर स्तर पर नई तकनीक का सहारा लिया जाता है। जैसे खेती की मिट्टी को लेकर सही समझ, उसके आधार पर बीज का चुनाव और उर्वरक और कीटनाशक का इस्तेमाल आदि। इस तकनीक की मदद से किसान के पास सहूलियत मिल जाती है कि वह खेती को लेकर सही फैसले ले रहे हैं।

फसल से जुड़ी जानकारी

- फार्मिंग की इस तकनीक की मदद से खेती में लगने वाली अधिक लागत से बचा जा सकता है।
- प्राकृतिक आपदाओं की वजह से होने वाले नुकसान से भी बचा जा सकता है।
- पर्यावरण पर भी दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है।
- आधुनिक तकीनीकी उपकरणों को इस्तेमाल किया जाता है।
- इसमें सेंसर की मदद से फसल, मिट्टी, खरपतवार, कटी या पौंधों में होने वाली बीमारियों के बारे में पता किया जा सकता है।
- फसल में हर छोटे से छोटे परिवर्तन पर नज़र रखी जा सकती है।

दुनियाभर में अपनाई जाती है ये तकनीक

इस तकनीक को 1980 के दशक में अमेरिका में शुरू किया गया, जिसके बाद इस तकनीक को दुनियाभर में अपनाया जा रहा है। इस तकनीक से नीदरलैंड में आलू की खेती की जा रही है।

इसकी मदद से आलू की सही गुणवत्ता प्राप्त हो रही है, तो वहीं उत्पादन बढ़ाने में मदद मिल रही है। इस पद्धति से किसानों को खेती की लागत कम लगी है और मुनाफा अच्छा होता है।

क्या हैं प्रिसिजन फार्मिंग के फायदे?

- कृषि उत्पादकता बढ़ाने में मदद
- मिट्टी की सेहत अच्छी रहती है
- फसल में ज्यादा रसायन की जरूरत नहीं पड़ती है।
- पानी जैसे रिसोर्स का उचित और पर्याप्त इस्तेमाल होता है।
- फसल की गुणवत्ता और उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलती है।
- खेती में लगने वाली लागत कम होती है।
- खेती से किसानों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुधारने में मदद मिलती है।

क्या है चुनौती?

प्रिसिजन फार्मिंग पर कई रिसर्च किए गए हैं। इन रिसर्च से पता चला है कि सबसे बड़ी चुनौती उचित शिक्षा और आर्थिक स्थिति है। देश में इस खेती को लेकर एक्सपर्ट्स, फंड और जानकारी को लेकर कमी है। इसके लिए प्रिसिजन फार्मिंग का शुरुआती खर्च भी बहुत अधिक है।

हरे निशान पर शेयर बाजार, 49000 के करीब सेंसेक्स

हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन शेयर बाजार की शुरुआत हरे निशान पर हुई। बीएसई का सेंसेक्स 161.6 अंक यानी 0.33 फीसदी की तेजी के साथ 48,965.28 के स्तर पर कारोबार कर रहा है। वहीं, निफ्टी 55.75 अंक यानी 0.38 फीसदी की बढ़त के साथ 14,637.20 के लेवल पर ट्रेड कर रहा है।

नई दिल्ली, एजेंसी। हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन शेयर बाजार की शुरुआत हरे निशान पर हुई। बीएसई का सेंसेक्स 161.6 अंक यानी 0.33 फीसदी की तेजी के साथ 48,965.28 के स्तर पर कारोबार कर रहा है। वहीं, निफ्टी 55.75 अंक यानी 0.38 फीसदी की बढ़त के साथ 14,637.20 के लेवल पर ट्रेड कर रहा है।

एचडीएफसी बैंक, एचडीएफसी, एशियन पेंट्स और एचसीएल टेक के शेयरों में बढ़त से शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 150 से अधिक अंक चढ़ गया। सेंसेक्स की कंपनियों में अल्ट्राटेक सीमेंट का शेयर सबसे अधिक दो प्रतिशत चढ़ गया।

एशियन पेंट्स, एचसीएल टेक, एचडीएफसी, टेक महिंद्रा और महिंद्रा एंड महिंद्रा के शेयर भी लाभ में थे। वहीं दूसरी ओर आईसीआईसीआई बैंक, रिलायंस इंडस्ट्रीज, बजाज फाइनेंस और एक्सिस बैंक के शेयर नुकसान में थे।

कल बढ़त के साथ बंद हुआ बाजार

सुबह लाल निशान पर शुरुआत करने वाला शेयर बाजार शाम को हरे निशान पर बंद हुआ। बीएसई सेंसेक्स 259.62 अंक की बढ़त के साथ 48,803.68 और एनएसई निफ्टी 76.65 अंक मजबूत होकर 14,581.45 अंक पर बंद हुआ। नकारात्मक घरेलू और वैश्विक संकेतों के बीच इंफोसिस, आईसीआईसीआई बैंक और एमएंडएम जैसे शेयरों में गिरावट के चलते प्रमुख शेयर सूचकांक सेंसेक्स गुरुवार को शुरुआती कारोबार के दौरान 200 अंक से अधिक टूट गया। सेंसेक्स 200 अंक से अधिक की तेजी के साथ खुला, लेकिन जल्द ही ये बढ़त चली गई और खबर लिखे जाने तक 30 शेयरों पर आधारित सूचकांक 216.73 अंक या 0.45 प्रतिशत की गिरावट के साथ 48,327.33 पर कारोबार कर रहा था। एनएसई निफ्टी 62.55 अंक या 0.43 प्रतिशत फिसलकर 14,442.25 पर था।

लिस्टिंग के डेढ़ महीने में कंपनी के शेयर ने दिया 150% रिटर्न

कोरोना की दूसरी लहर के बीच शेयर बाजार में महज डेढ़ महीने पहले लिस्ट हुई हेल्थकेयर और वेलनेस कंपनी न्यूरेका ने कमाल कर दिया है। इस अवधि में इसने 150 फीसद का रिटर्न दिया है. इस साल 25 फरवरी को इस कंपनी के शेयर 634.95 रुपये के भाव पर लिस्ट हुए थे और आज यानी 16 अप्रैल (शुक्रवार) को इसमें 10 फीसद का अपर सर्किट लग गया। महज डेढ़ महीने में ही इसका भाव 634.95 रुपये से 1,004.90 रुपये पर पहुंच गया है।

बता दें न्यूरेका का 100 करोड़ रुपये का आईपीओ 15 से 17 फरवरी के दौरान खुला था और इसे कुल 39.93 गुना सब्सक्राइब किया गया था। वित्त वर्ष 2019-20 के दौरान कंपनी ने 99.48 करोड़ रुपये के रेवेन्यू और 6.4 करोड़ रुपये का मुनाफा दर्ज किया। विश्लेषकों को कंपनी से मार्च तिमाही में दमदार नतीजों की उम्मीद है। उनके मुताबिक कंपनी लाइफस्टाइल से जुड़े उम्दा प्रोडक्ट्स भी सप्लाई करती है, जिससे आने वाले सालों में इसकी ग्रोथ दमदार हो सकती है। विश्लेषक निवेशकों को मुनाफा भुनाने के बजाय अपनी पोजिशन होल्ड करने की सलाह दे रहे हैं।

कोरोना की दूसरी लहर के चलते ऑक्सीमीटर, थर्मोमीटर, बीपी मॉनिटर, नेब्यूलाइजर जैसे उत्पादों की मांग बढ़ी है। दरअसल, न्यूरेका ऐसे ही प्रोडक्ट्स बनाती है। कंपनी पांच श्रेणियों- क्रोनिक डिवाइस, ऑर्थोपेडिक, मदर एंड चाइल्ड, न्यूट्रीशन और लाइफसाइट सेगमेंट के प्रोडक्ट सप्लाई करती है। इस कंपनी के पास डॉ. ट्रस्ट और डॉ. फिजियो जैसे ब्रांड हैं।

महामारी के साथ महंगाई ने भी तोड़ी आम आदमी की कमर, विशेषज्ञ ने बताया कब से मिलेगी इससे राहत?

देश में महंगाई का दौर आने वाले कुछ महीनों तक और रहने वाला है। विशेषज्ञों की राय में कोर महंगाई यानी ईंधन और खाने पीने की चीजों को छोड़कर बाकी सामान के दाम जुलाई से पहले घटने वाले नहीं हैं। इसके पीछे की वजह तमाम बढ़ती मांग और उद्योग धंधों का चालू न हो पाना है। आर्थिक विशेषज्ञ प्रणब सेन के मुताबिक, कोर क्षेत्र की महंगाई इस साल के मध्य तक घटनी शुरू होगी और सब ठीक रहा तो साल के आखिर तक ही जाकर घट पाएगी क्योंकि लंबे समय बाद एक साथ औद्योगिक गतिविधियां होनी शुरू हुई हैं और कच्चे माल की जरूरत बढ़ी है।

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में महंगाई का दौर आने वाले कुछ महीनों तक और रहने वाला है। विशेषज्ञों की राय में कोर महंगाई यानी ईंधन और खाने पीने की चीजों को छोड़कर बाकी सामान के दाम जुलाई से पहले घटने वाले नहीं हैं।

इसके पीछे की वजह तमाम बढ़ती मांग और उद्योग धंधों का चालू न हो पाना है। आर्थिक विशेषज्ञ प्रणब सेन के मुताबिक, कोर क्षेत्र की महंगाई इस साल के मध्य तक घटनी शुरू होगी और सब ठीक रहा तो साल के आखिर तक ही जाकर घट पाएगी क्योंकि लंबे समय बाद एक साथ औद्योगिक गतिविधियां होनी शुरू हुई हैं और कच्चे माल की जरूरत बढ़ी है।

हालांकि उन्होंने यह भी माना कि पैदावार अच्छी रहने की वजह से खाने-पीने की चीजों के दाम ज्यादा नहीं बढ़ेंगे। क्योंकि मांग के मुकाबले आपूर्ति की व्यवस्था है। साथ ही उन्होंने ये आशंका भी जाहिर की है कि अगर लॉकडाउन और कर्फ्यू को ठीक तरह से मैनेज नहीं किया गया तो खाने-पीने की चीजों की भी महंगाई भी बढ़ सकती है।

मार्च में थोक महंगाई दर आठ साल के उच्चतम स्तर पर

मार्च महीने में थोक महंगाई दर आठ साल के उच्चतम स्तर 7.39 प्रतिशत पर पहुंच चुकी है। इसके पीछे अहम वजह कच्चे तेल और धातु की बढ़ती कीमतों को माना जा रहा है। पिछले साल कोविड-19 महामारी के प्रकोप को रोकने के लिए लगाए गए देशव्यापी लॉकडाउन के चलते कीमतें कम थीं। लेकिन अब जब कारोबारी गतिविधियां शुरू हो गयी हैं तो हालात बदलने लगे हैं।

हालांकि महामारी की दूसरी लहर को लेकर भी चिंताएं हैं लेकिन क्योंकि अभी तक देशव्यापी लॉकडाउन नहीं लगाया गया है और कई राज्यों में औद्योगिक क्षेत्रों और जरूरी सामान के उत्पादन को रियायत भी दी जा रही है। ऐसे में उत्पादन बढ़ते रहने का ही अनुमान है।

अक्तूबर 2012 में था यह स्तर

थोक महंगाई का इतना उच्च स्तर इससे पहले अक्तूबर 2012 में रहा था, जब महंगाई 7.4 प्रतिशत पर पहुंच गई थी।

पेट्रोल और डीजल की बढ़ती कीमतों के कारण मार्च में ईंधन और बिजली की मुद्रास्फीति 10.25 प्रतिशत रही, जो फरवरी में 0.58 प्रतिशत थी।

कोरोना के टीकाकरण से उम्मीदें बढ़ीं

विशेषज्ञों का कहना है कि कोरोना के टीकाकरण से दुनिया भर में आशावाद बढ़ा है, जिसके चलते प्रमुख चीजों के दाम बढ़ रहे हैं। यही नहीं ये भी माना जा रहा है कि हालांकि, मार्च 2021 में कच्चे तेल की कीमतों में ऊपरी स्तर से गिरावट देखने को मिली, लेकिन बढ़ती मांग से फिलहाल अप्रैल 2021 में भी मुद्रास्फीति के तेजी से बढ़ने का अनुमान है। अगले कुछ महीनों तक प्रमुख चीजों की महंगाई 11-11.5 प्रतिशत और थोक महंगाई दर 8-8.5 प्रतिशत पर रह सकती है।

सरसों, बिनौला, सीपीओ और पामोलीन समेत सभी तेलों में दिखी तेजी

मंडियों में कम आवक और मांग बढ़ने से दिल्ली तेल-तिलहन बाजार में शनिवार को सोयाबीन तेल-तिलहन, बिनौला, सीपीओ और पामोलीन सहित लगभग सभी तेल कीमतों में सुधार का रुख रहा।

नई दिल्ली, एजेंसी। मंडियों में कम आवक और मांग बढ़ने से दिल्ली तेल-तिलहन बाजार में शनिवार को सोयाबीन तेल-तिलहन, बिनौला, सीपीओ और पामोलीन सहित लगभग सभी तेल कीमतों में सुधार का रुख रहा। तेल उद्योग के जानकारों के अनुसार आयातित तेलों के मुकाबले सस्ता होने से सरसों तेल में मिलावट नहीं हो रही है। इसके अलावा सरसों को काफी स्वास्थ्यप्रद भी माना जाता है जिस तेल की विशेषकर उत्तर भारत में काफी खपत है। विदेशी तेलों में तेजी की वजह से घरेलू तेल तिलहनों के भाव में भी तेजी है और किसानों को अच्छा लाभ मिल रहा है। सूत्रों ने कहा कि यदि यही गति रही, सरकार का समर्थन मिलता रहा और किसानों को अच्छा लाभ मिलता रहा तो तिलहन उत्पादन में हम जल्द ही आत्मनिर्भर होंगे।

सूत्रों ने बताया कि निर्यात मांग और स्थानीय मांग की वजह से मूंगफली तेल तिलहन कीमतों में भी पर्याप्त लाभ दर्ज हुआ। मांग बढ़ने की वजह से बिनौला तेल कीमत में भी पर्याप्त सुधार आया। मलेशिया एक्सचेंज में तेजी की वजह से सीपीओ और पामोलीन तेल कीमतों में भी पर्याप्त सुधार देखने को मिला। सूत्रों ने कहा कि नमकीन बनाने वाली कंपनियों और शादी विवाह के आयोजनों में मक्का रिफाइंड की इन दिनों मांग बढ़ रही है जिससे मक्का तेल कीमतों में भी सुधार आया। उन्होंने कहा कि किसानों को तेल तिलहनों के दाम अच्छे मिलने से महंगाई पर कोई विशेष असर नहीं होगा उल्टा किसान उत्पादन बढ़ाने को प्रोत्साहित होंगे जिससे आत्मनिर्भरता का रास्ता आसान होगा और अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

बाजार में थोक भाव इस प्रकार रहे- (भाव- रुपये प्रति क्विंटल)

- सरसों तिलहन - 7,000 - 7,100 (42 प्रतिशत कंडीशन का भाव) रुपये।
- मूंगफली दाना - 6,560 - 6,605 रुपये।
- मूंगफली तेल मिल डिलिवरी (गुजरात)- 16,000 रुपये।
- मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड तेल 2,545 - 2,605 रुपये प्रति टिन।
- सरसों तेल दादरी- 14,500 रुपये प्रति क्विंटल।
- सरसों पक्की घानी- 2,205 -2,285 रुपये प्रति टिन।
- सरसों कच्ची घानी- 2,385 - 2,415 रुपये प्रति टिन।
- तिल तेल मिल डिलिवरी - 15,200 - 18,200 रुपये।
- सोयाबीन तेल मिल डिलिवरी दिल्ली- 15,200 रुपये।
- सोयाबीन मिल डिलिवरी इंदौर- 14,800 रुपये।
- सोयाबीन तेल डीगम, कांडला- 13,950 रुपये।
- सीपीओ एक्स-कांडला- 12,100 रुपये।
- बिनौला मिल डिलिवरी (हरियाणा)- 14,600 रुपये।
- पामोलिन आरबीडी, दिल्ली- 14,000 रुपये।
- पामोलिन कांडला 12,900 (बिना जीएसटी के)
- सोयाबीन दाना 7,250 - 7,300 रुपयेः सोयाबीन लूज 7,150 - 7,200 रुपये
- मक्का खल 3,800 रुपये।

अस्पताल में भर्ती के लिए एंटीजेन टेस्ट की पॉजिटिव रिपोर्ट काफी- योगी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि एंटीजन टेस्ट के पॉजिटिव होने के बाद हॉस्पिटल में भर्ती करने के लिए आरटीपीसीआर टेस्ट के पॉजिटिव होने की कोई आवश्यकता नहीं है।

लखनऊ (ब्यूरो)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि एंटीजन टेस्ट के पॉजिटिव होने के बाद हॉस्पिटल में भर्ती करने के लिए आरटीपीसीआर टेस्ट के पॉजिटिव होने की कोई आवश्यकता नहीं है। मरीज को जितना जल्दी इलाज मिलेगा, वह उतना ही जल्द स्वस्थ होगा।

योगी ने सोमवार को टीम-11 के साथ समीक्षा बैठक में कहा कि इंटीग्रेटेड कमांड एन्ड कंट्रोल सेंटर से मरीज को जो अस्पताल आवंटित किया गया है, वहां उसे एडमिट करना अनिवार्य है। जिलाधिकारी यह सुनिश्चित कराएं वरना जिम्मेदार के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जायेगी। मुख्यमंत्री कार्यालय से इसकी मॉनिटरिंग की जायेगी।

उन्होंने कहा कि कोई भी सरकारी अथवा निजी अस्पताल बेड उपलब्ध होने पर कोविड पॉजिटिव मरीज को भर्ती के लिए मना नहीं कर सकता है। यदि सरकारी अस्पताल में बेड उपलब्ध नहीं है, तो संबंधित अस्पताल उसे निजी चिकित्सालय में रेफर करेगा। निजी हॉस्पिटल में मरीज भुगतान के आधार पर उपचार कराने में यदि सक्षम नहीं होगा, तो ऐसी दशा में राज्य सरकार आयुष्मान भारत योजना के तहत अनुमन्य दर पर वहां उसके इलाज का भुगतान करेगी।

श्री योगी ने कहा कि मौजूदा हालात में अस्पतालों में ओपीडी सेवाएं स्थगित हैं। ऐसे में टेलीकन्सल्टेशन को बढ़ावा दिया जाए। कोविड होम आइसोलेशन और नॉन कोविड मरीजों के लिए विशेषज्ञ चिकित्सकों की सूची/संपर्क माध्यम का व्यापक प्रचार-प्रसार कराया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि होम आइसोलेशन में इलाजरत मरीजों से सीएम हेल्पलाइन के माध्यम से हर दिन संवाद बनाया जाए। उन्हें न्यूनतम एक सप्ताह की अवधि के लिए मेडिकल किट उपलब्ध कराया जाए। स्वास्थ्य मंत्री के स्तर से मेडिकल किट वितरण व्यवस्था की जिलेवार समीक्षा की जाए। सीएमओ की जवाबदेही तय की जाए। दवाओं का कोई अभाव नहीं है। अस्पतालों में इलाजरत मरीजों से हर दिन संवाद बनाया जाए।

फर्जी वोटिंग को लेकर बवाल, पोलिंग बूथ पर पथराव

पिछले दिनों कोरोना वायरस पॉजिटिव पाए गए केंद्रीय मंत्री संतोष गंगवार राज्य बीमा कर्मचारी निगम मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराए गए हैं।

मिर्जापुर, विशेष संवादाता। मिर्जापुर में पंचायत चुनाव के दौरान फर्जी वोटिंग को लेकर बवाल हो गया। उग्र ग्रामीणों ने पहले पोलिंग बूथ पर पथराव किया फिर वहां मौजूद एसडीएम और पुलिस की गाड़ियों को क्षतिग्रस्त कर दिया। मौके पर मौजूद पुलिस वालों ने किसी तरह भागकर जान बचाई। भारी फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे एडीएम ने किसी तरह हालात को काबू में किया। फिलहाल दोबारा मतदान शुरू हो चुका है।

बताया जा रहा है कि मिर्जापुर में विंध्याचल के घमहापुर गांव में कुछ लोगों ने फर्जी वोटिंग का आरोप लगाकर पहले हंगामा शुरू किया। देखते ही देखते जब काफी संख्या में लोग जुटने लगे तो पुलिस ने खदेड़ने की कोशिश की। इसी से लोग उग्र हो गए और पथराव शुरू कर दिया। देखते ही देखते पोलिंग बूथ पर जबरदस्त पथराव शुरू हो गया। पुलिस की संख्या कम होने से जवान भाग खड़े हुए। लोगों ने वहां मौजूद एसडीएम और पुलिस की एक वैन को भी पथराव कर क्षतिग्रस्त कर दिया। हमले में गाड़ी का चालक भी घायल हो गया है।

बवाल की सूचना अधिकारियों तक पहुंची तो हड़कंप मच गया। तत्काल एडीएम के साथ बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स मौके पर पहुंची। किसी तरह मामले को शांत किया जा सका। मिर्जापुर के डीआईजी जे रवींद्र गौड़ ने बताया कि कुछ लोग फर्जी वोटिंग का आरोप लगा रहे थे। उन्हें खदेड़ दिया गया है। तीन लोगों को हिरासत में लिया गया है। अब शांतिपूर्ण मतदान हो रहा है। पोलिंग शांति से निबटने के बाद अन्य लोगों पर कार्रवाई की जाएगी।

बरेली में 14 संक्रमितों की मौत, 873 लोग कोरोना पॉजिटिव

कोरोना संक्रमण का जानलेवा हमला और तेज होता जा रहा है। रविवार को 12 संक्रमितों की मौत हो गई। इसमें कई संक्रमितों का कोविड अस्पताल में इलाज चल रहा था। रविवार को जिले में 873 लोग कोरोना पॉजिटिव मिले हैं जिनको आइसोलेट किया जा रहा है।

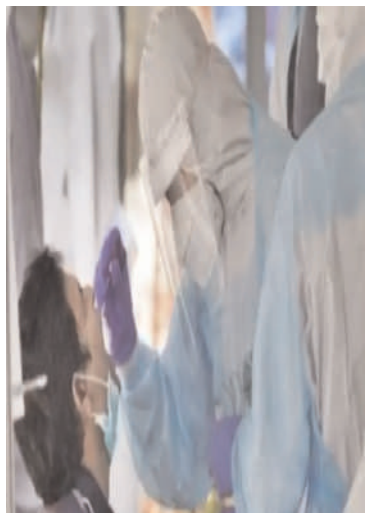

बरेली, संवादाता। कोरोना संक्रमण का जानलेवा हमला और तेज होता जा रहा है। रविवार को 12 संक्रमितों की मौत हो गई। इसमें कई संक्रमितों का कोविड अस्पताल में इलाज चल रहा था। रविवार को जिले में 873 लोग कोरोना पॉजिटिव मिले हैं जिनको आइसोलेट किया जा रहा है।

आरएएसएस से जुड़े अरविंद वाजपेयी की रविवार को मौत हो गई। उनकी रिपोर्ट कोरोना पाजिटिव आई थी। विशिष्ट बीटीसी शिक्षक वेलफेयर एसोसिएशन के जिलामंत्री सोमपाल गंगवार की रविवार को मौत हो गई। व्यापारी नेता हरिकांत खंडेलवाल के बेटे रितेश की इलाज के दौरान कोविड एल-3 अस्पताल में मौत हो गई। उनकी हालत कई दिन से गंभीर बनी हुई थी। पवन विहार में एक टेंपो चालक की मौत हो गई। उसकी रिपोर्ट कुछ दिन पहले कोरोना पाजिटिव आई थी।

कालीबाड़ी में होम आइसोलेट कोरोना संक्रमित की घर में ही मौत हो गई। सूचना मिलने पर प्रशासन के निर्देश पर स्वास्थ्य विभाग की टीम मौके पर पहुंची और कोविड प्रोटोकाल के तहत शव घर से निकाला। मझगवां ब्लाक के डाक्टर आनंद ने कोविड अस्पताल में दम तोड़ दिया। बरेली डिस्ट्रिक ताइक्वांडो एसोसिएशन के सचिव विपिन पाठक की रविवार को पीलीभीत बाईपास स्थित कोविड अस्पताल में मौत हो गई।

प्रियदर्शिनी नगर में कोरोना संक्रमित मरीज की इलाज के दौरान कोविड अस्पताल में मौत हो गई। व्यापारी नेता दानिश जमाल की मां की रविवार को मौत हो गई। उनकी रिपोर्ट कोरोना पाजिटिव आई थी।

300 बेड कोविड अस्पताल में युवा ट्रांसपोर्टर की मौत हो गई। उनकी हालत नाजुक बनी हुई थी। इसके अलावा डीडीपुरम कोविड अस्पताल में दो संक्रमितों ने दम तोड़ दिया। एसआरएमएस में 80 वर्षीय बुजुर्ग और 28 वर्षीय युवती की रविवार को मौत हो गई।

रिश्तेदारों से मदद न मिलने पर हिन्दू दोस्त को मुस्लिम ने दी मुखाग्नि

कोरोना के इस संकट काल में ऐसी घटनाएं हो रही है जिसे सुनकर व देखकर मानवता भी शर्मसार है। हाईकोर्ट के ज्वाइंट रजिस्ट्रार का शुक्रवार की रात शहर के निजी अस्पताल में निधन हो गया।

प्रयागराज, संवादाता। कोरोना के इस संकट काल में ऐसी घटनाएं हो रही है जिसे सुनकर व देखकर मानवता भी शर्मसार है। हाईकोर्ट के ज्वाइंट रजिस्ट्रार का शुक्रवार की रात शहर के निजी अस्पताल में निधन हो गया। अंतिम समय में जन्मजात रिश्तों ने मुंह मोड़ लिया तो मुस्लिम दोस्त ने कांधा दिया और मुखाग्नि देकर दोस्ती की लाज रख ली।

हेम सिंह जयंतीपुर प्रीतमनगर में अकेले रहते थे। डेढ़ साल पहले पत्नी और कुछ साल पहले इकलौती बेटी का निधन हो गया था। 19 अप्रैल को कोरोना के कारण उनकी तबीयत बिगड़ने पर इटावा में रहने वाले दोस्त चौधरी शिराज अहमद ने फोन पर बात कर सिविल लाइंस के एक निजी अस्पताल में दो लाख रुपये ऑनलाइन जमा कर उन्हें एडमिट करवाया।

शुक्रवार को दिन में हेम सिंह की तबीयत बिगड़ी तो शिराज को फोन गया। वे तत्काल प्रयागराज के लिए रवाना हो गए लेकिन 400 किमी का सफर तय करके रात करीब 9:30 बजे तक जब पहुंचे तो उनकी सांसें टूट चुकी थी। शनिवार सुबह अंतिम संस्कार के लिए शिराज अहमद ने एक-एक करके कम से कम 20 रिश्तेदारों और परिचितों को फोन लगाया लेकिन कोई कंधा देने को तैयार नहीं हुआ। आखिरकार शिराज अहमद अपने दोस्त का शव एम्बुलेंस में लेकर फाफामऊ घाट पहुंचे। हेम सिंह के साथ रहने वाले संदीप और एम्बुलेंस के दो लड़कों की मदद से अंतिम संस्कार की तैयारी हुई। उसके बाद शिराज अहमद ने मुखाग्नि दी। अंतिम संस्कार की क्रिया पूरी करने के लिए शिराज ढाई दिन प्रीतमनगर में हेम सिंह के घर पर ही रुके हैं।

चौधरी शिराज अहमद को जब हेम सिंह की तबीयत खराब होने की खबर मिली तो वे इटावा से आगरा अपनी बड़ी बहन की सास के जनाजे में शामिल होने के लिए रवाना हो चुके थे। आगरा के रास्ते पर सात किमी आगे बढ़ चुके शिराज ने अपने भाई को जनाजे में जाने के लिए कहा और खुद दोस्त से मिलने प्रयागराज के लिए चल पड़े। बकौल शिराज- 'अंतिम संस्कार के लिए हेम सिंह के एक करीबी रिश्तेदार को जब फोन किया तो सपाट जवाब मिला-आप लोग हैं तो हमारी क्या आवश्यकता है। आप लोग पर्याप्त हैं।'

हेम सिंह के करीबी और अपर शासकीय अधिवक्ता प्रथम बशारत अली खान ने बताया की हेम सिंह ने पूर्व डीजीपी आनंद लाल बनर्जी की सगी बहन माला बनर्जी से शादी की थी। वह भी हाईकोर्ट में असिस्टेंट रजिस्ट्रार थीं और डेढ़ साल पहले उनका निधन हो गया। तीन दिन पहले कोरोना से सगे साले के इंतकाल के कारण घर पर ही क्वारंटीन बशारत अली ने बताया कि हेम सिंह के कई रिश्तेदारों और परिचितों को फोन और व्हाट्सएप पर सूचना दी लेकिन कोई शव लेने को तैयार नहीं हुआ। हेम सिंह छोटी नदियां बचाओ अभियान से भी जुड़े थे।

रत्नशिखा टाइम्स हिन्दी साप्ताहिक के लिए स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक सनी विश्राम सिंह द्वारा विश्नू आफसेट, बैसी की मस्जिद भानमती चौराहा हुसेनगंज लखनऊ (उ.प्र.) से मुद्रित कराकर 2, तुलसी काम्पलेक्स तालकटोरा रोड नंदा खेड़ा लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित। ***संपादक**- एस.वी.सिंह उजागर, मो.-9451988443 , 9369019969 (किसी भी वाद के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा), **प्रबंध संपादक**- एस. जसपाल सिंह, मो. - 7570099800, Email: ratnashikhatimes@gmail.com, web: https://ratnashikhatimes.page